# यहोशू की पुस्तक

## अध्याय 1

## यहोशू की पुस्तक का परिचय

Manuscript

thirdmill
Biblical Education. For the World. For Free.

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ 2021के द्वारा

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस प्रकाशन के किसी भी भाग को प्रकाशक, थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़, इनकोरपोरेशन, 316, लाइव ओक्स बुलेवार्ड, कैसलबरी, फ्लोरिडा 32707 की लिखित अनुमति के बिना समीक्षा, टिप्पणी, या अध्ययन के उद्देश्यों के लिए संक्षिप्त उद्धरणों के अतिरिक्त किसी भी रूप में या किसी भी तरह के लाभ के लिए पुनः प्रकशित नहीं किया जा सकता।

पवित्रशास्त्र के सभी उद्धरण बाइबल सोसाइटी ऑफ़ इंडिया की हिन्दी की पवित्र बाइबल से लिए गए हैं। सर्वाधिकार © The Bible Society of India

## थर्ड मिलेनियम के विषय में

1997 में स्थापित, थर्ड मिलेनियम एक लाभनिरपेक्ष सुसमाचारिक मसीही सेवकाई है जो पूरे संसार के लिए मुफ्त में बाइबल आधारित शिक्षा प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध है।

**संसार के लिए मुफ़्त में बाइबल आधारित शिक्षा।**

हमारा लक्ष्य संसार भर के हज़ारों पासवानों और मसीही अगुवों को मुफ़्त में मसीही शिक्षा प्रदान करना है जिन्हें सेवकाई के लिए पर्याप्त प्रशिक्षण प्राप्त नहीं हुआ है। हम इस लक्ष्य को अंग्रेजी, अरबी, मनडारिन, रूसी, और स्पैनिश भाषाओं में अद्वितीय मल्टीमीडिया सेमिनारी पाठ्यक्रम की रचना करने और उन्हें विश्व भर में वितरित करने के द्वारा पूरा कर रहे हैं। हमारे पाठयक्रम का अनुवाद सहभागी सेवकाइयों के द्वारा दर्जन भर से अधिक अन्य भाषाओं में भी किया जा रहा है। पाठ्यक्रम में ग्राफिक वीडियोस, लिखित निर्देश, और इंटरनेट संसाधन पाए जाते हैं। इसकी रचना ऐसे की गई है कि इसका प्रयोग ऑनलाइन और सामुदायिक अध्ययन दोनों संदर्भों में स्कूलों, समूहों, और व्यक्तिगत रूपों में किया जा सकता है।

वर्षों के प्रयासों से हमने अच्छी विषय-वस्तु और गुणवत्ता से परिपूर्ण पुरस्कार-प्राप्त मल्टीमीडिया अध्ययनों की रचना करने की बहुत ही किफ़ायती विधि को विकसित किया है। हमारे लेखक और संपादक धर्मवैज्ञानिक रूप से प्रशिक्षित शिक्षक हैं, हमारे अनुवादक धर्मवैज्ञानिक रूप से दक्ष हैं और लक्ष्य-भाषाओं के मातृभाषी हैं, और हमारे अध्यायों में संसार भर के सैकड़ों सम्मानित सेमिनारी प्रोफ़ेसरों और पासवानों के गहन विचार शामिल हैं। इसके अतिरिक्त हमारे ग्राफिक डिजाइनर, चित्रकार, और प्रोडयूसर्स अत्याधुनिक उपकरणों और तकनीकों का प्रयोग करने के द्वारा उत्पादन के उच्चतम स्तरों का पालन करते हैं।

अपने वितरण के लक्ष्यों को पूरा करने के लिए थर्ड मिलेनियम ने कलीसियाओं, सेमिनारियों, बाइबल स्कूलों, मिशनरियों, मसीही प्रसारकों, सेटलाइट टेलीविजन प्रदाताओं, और अन्य संगठनों के साथ रणनीतिक सहभागिताएँ स्थापित की हैं। इन संबंधों के फलस्वरूप स्थानीय अगुवों, पासवानों, और सेमिनारी विद्यार्थियों तक अनेक विडियो अध्ययनों को पहुँचाया जा चुका है। हमारी वेबसाइट्स भी वितरण के माध्यम के रूप में कार्य करती हैं और हमारे अध्यायों के लिए अतिरिक्त सामग्रियों को भी प्रदान करती हैं, जिसमें ऐसे निर्देश भी शामिल हैं कि अपने शिक्षण समुदाय को कैसे आरंभ किया जाए।

थर्ड मिलेनियम a 501(c)(3) कारपोरेशन के रूप में IRS के द्वारा मान्यता प्राप्त है। हम आर्थिक रूप से कलीसियाओं, संस्थानों, व्यापारों और लोगों के उदार, टैक्स-डीडक्टीबल योगदानों पर आधारित हैं। हमारी सेवकाई के बारे में अधिक जानकारी के लिए, और यह जानने के लिए कि आप किस प्रकार इसमें सहभागी हो सकते हैं, कृपया हमारी वैबसाइट http://thirdmill.org को देखें।

# विषय-वस्तु


परिचय ..... 1
लेखक और लेखन का समय ..... 1
**पारंपरिक दृष्टिकोण ..... 1**
**आलोचनात्मक दृष्टिकोण ..... 3**
**सुसमाचारिक दृष्टिकोण ..... 3**
विकास ..... 4
पूर्णता ..... 4
रूपरेखा और उद्देश्य ..... 6
**विषय-वस्तु और संरचना ..... 7**
जयवंत विजय (1–12) ..... 8
गोत्रों को उनका उत्तराधिकार दिया जाना (13–22) ..... 8
वाचाई विश्वासयोग्यता (23–24) ..... 8
**मूल अर्थ ..... 9**
जयवंत विजय ..... 11
गोत्रों को उनका उत्तराधिकार दिया जाना ..... 13
वाचाई विश्वासयोग्यता ..... 15
मसीही अनुप्रयोग ..... 16
**उद्घाटन ..... 17**
जयवंत विजय ..... 17
गोत्रों को उनका उत्तराधिकार दिया जाना ..... 18
वाचाई विश्वासयोग्यता ..... 18
**निरंतरता ..... 18**
जयवंत विजय ..... 19
गोत्रों को उनका उत्तराधिकार दिया जाना ..... 19
वाचाई विश्वासयोग्यता ..... 19
**पूर्णता ..... 20**
जयवंत विजय ..... 20
गोत्रों को उनका उत्तराधिकार दिया जाना ..... 20
वाचाई विश्वासयोग्यता ..... 21
उपसंहार ..... 21




चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

# यहोशू की पुस्तक

अध्याय एक

यहोशू की पुस्तक का परिचय

## परिचय

संसार के सब लोगों में यह बात आम पाई जाती है कि वे उन बड़ी घटनाओं में आनंदित हों जो उस समय घटीं जब उनके राष्ट्रों की स्थापना हुई थी। परंतु जब बाद की पीढियाँ चुनौतियों, हानि और निराशा का सामना करती हैं, तो उन्हें अक्सर पुराने समय की उन घटनाओं के महत्व के बारे में याद दिलाना आवश्यक होता है। कई रूपों में, इस आम अनुभव को पुराने नियम की यहोशू की पुस्तक में दर्शाया गया है। जब इस्राएलियों ने कनान में अपने गृहक्षेत्र में पहले-पहल प्रवेश किया तो बड़ी-बड़ी घटनाएँ घटी थीं। परंतु जब बाद की पीढ़ियों ने कठिनाइयों का सामना किया तो उनके लिए नए रूप में यह सीखना आवश्यक हो गया कि वे घटनाएँ कितनी महत्वपूर्ण थीं।

यह हमारी श्रृंखला *यहोशू की पुस्तक* का पहला अध्याय है, जिसका शीर्षक हमने "यहोशू का परिचय" दिया है। जैसा कि हम देखेंगे, जब हम सीखेंगे कि प्राचीन इस्राएल के लिए यहोशू की पुस्तक का क्या अर्थ था, तो हम इस बात को देखने के लिए बेहतर रूप से तैयार होंगे कि हमारे समय में भी इसके पास हमें देने के लिए कितना कुछ है।

यहोशू की पुस्तक का हमारा परिचय तीन भागों में विभाजित होगा। सबसे पहले, हम उसके लेखक और लिखे जाने के समय की खोज करेंगे। दूसरा, हम इसकी शैली और इसके उद्देश्य के एक विवरण का परिचय देंगे। और तीसरा, हम उन कई मोटे-मोटे विचारों की रूपरेखा बनाएँगे जिन्हें हमें अपनी इस पुस्तक के मसीही अनुप्रयोगों की रचना करते समय मन में रखना होगा। आइए हम यहोशू की पुस्तक के लेखक और लिखे जाने के समय के साथ आरंभ करें।

## लेखक और लेखन का समय

पवित्र आत्मा ने यहोशू की पुस्तक को प्रेरित किया ताकि यह हमें सच्चे ऐतिहासिक विवरण प्रदान करे। परंतु हमें यह भी याद रखना है कि पवित्र आत्मा ने पवित्रशास्त्र के मानवीय लेखकों के दृष्टिकोणों और उद्देश्यों का भी प्रयोग किया कि वह उनके ऐतिहासिक प्रलेखों को आकार दे। बाइबल के अन्य भागों के समान, जितना अधिक हम मानवीय लेखक और उसके समयों के बारे में जानकारी प्राप्त करते हैं, उतना ही बेहतर हम यहोशू की पुस्तक को समझ पाएँगे।

हम यहोशू के लेखक और लेखन के समय के विषय में तीन दृष्टिकोणों को संक्षिप्त रूप में दर्शाएँगे : पहला, पारंपरिक दृष्टिकोण; दूसरा, आधुनिक आलोचनात्मक दृष्टिकोण; और तीसरा, कुछ आधारभूत सुसमाचारिक दृष्टिकोण जो इस अध्याय में हमारा मार्गदर्शन करेंगे। आइए पहले हम अपनी पुस्तक के लेखक और लेखन के समय के प्राचीन, पारंपरिक दृष्टिकोणों की ओर मुड़ें।

### पारंपरिक दृष्टिकोण

यहोशू की पुस्तक में लेखक का नाम नहीं दिया गया है। न तो स्वयं पुस्तक, और न ही शेष पवित्रशास्त्र हमें बताता है कि इसका अंतिम संकलनकर्ता या लेखक कौन था। शीर्षक "यहोशू की पुस्तक" जो हमारी अधिकांश आधुनिक बाइबलों में पाया जाता है, वह इसके लिखे जाने के बहुत बाद



चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

जोड़ा गया था। परंतु इन विषयों पर पारंपरिक प्राचीन यहूदी और मसीही विचारों के अभिप्रायों को *तलमूड* में व्यक्त रब्बीवादी दृष्टिकोणों में बहुत ही सुंदर रूप में सारगर्भित किया गया है।

*तलमूड* के एक भाग में प्रश्नों और उत्तरों की एक श्रृंखला में, जो *ट्रैक्टेट बाबा बाथरा 15* के नाम से प्रचलित है, हम यह पढ़ते हैं :

> [तुम कहते हो कि] यहोशू ने अपनी पुस्तक लिखी। परंतु क्या यह नहीं लिखा, "यहोवा का दास, नून का पुत्र यहोशू, मर गया"? — इसे एलीआज़ार के द्वारा पूरा किया गया। परंतु इसमें यह भी लिखा है, "हारून का पुत्र एलीआज़ार भी मर गया" — पीनहास ने इसे पूरा किया।

जैसा कि हम यहाँ देखते हैं, प्रमुख रब्बियों ने हमारी पुस्तक के एक बड़े हिस्से के लेखक के रूप में स्वयं यहोशू को ही पहचाना था। परंतु उन्होंने यह भी माना कि यहोशू की पुस्तक के कुछ भागों को यहोशू की मृत्यु के बाद भी लिखा गया। उन्होंने पद 24:29 में यहोशू की मृत्यु के वर्णन का लेखक याजक एलीआज़ार को माना। और उन्होंने पद 24:33 में एलीआज़ार की मृत्यु के वर्णन को एलीआज़ार के पुत्र पीनहास के साथ जोड़ा। पारंपरिक दृष्टिकोण से यहोशू की पुस्तक बहुत जल्दी लिखी गई थी, पुस्तक की घटनाओं के घटने के ठीक बाद ही।

वास्तव में, *तलमूड* के विशेष दावों के समर्थन में कोई प्रमाण नहीं हैं। परंतु हमें इस संभावना को पूरी तरह से त्याग नहीं देना चाहिए कि यहोशू, एलीआज़ार और पीनहास ने बाइबल की इस पुस्तक को लिखा था। निर्गमन 17:14 में ही हम देखते हैं कि यहोशू इस्राएल के आरंभिक ऐतिहासिक प्रलेखों को सँभालने में शामिल था। साथ ही, यहोशू 8:32 और 24:26 जैसे अनुच्छेदों में यहोशू ने रीति-संबंधी प्रयोग के लिए परमेश्वर की व्यवस्था के लिखे जाने का निरीक्षण किया था। और इसी प्रकार, पवित्रशास्त्र को सँभालने तथा सिखाने में एलीआज़ार और उसके पुत्र पीनहास जैसे याजकों और लेवियों की भी महत्वपूर्ण भूमिकाएँ थीं।

कुछ ही क्षणों में, हम ध्यान देंगे कि यहोशू की पुस्तक का लेखक अपनी पुस्तक को लिखते समय कई लिखित स्रोतों पर निर्भर रहा था। और यह संभव है कि यहोशू, एलीआज़ार, पीनहास और उनके जैसे अन्य लोगों ने कम से कम अप्रत्यक्ष रूप से इन स्रोतों में योगदान दिया हो।

> यहोशू की पुस्तक इसके लेखन के विषय में कुछ प्रमाण देती है। अध्याय 18 में यह सात गोत्रों के बारे में बताती है जिन्हें उनका भाग नहीं मिला था, और उन्होंने यहोशू से इसके बारे में बात की और उसने उन गोत्रों के पुरुषों को उस देश में जाने और एक ब्यौरा लिखने की आज्ञा दी कि वह देश कैसा दिखाई देता है और फिर वे लोग गए और अपने ब्यौरे के साथ वापस आए। मुझे ऐसा लगता है कि शायद यही वह ब्यौरा था जिसने अध्याय 18-20 के विवरण के रूप में कार्य किया, जब वे इन गोत्रों को उनका हिस्सा प्रदान किए जाने के बारे में बात करते हैं, तो यह उन नगरों का वर्णन करता है जिन पर उन्होंने अधिकार किया और उस देश की सीमाओं के बारे में। और इसलिए उन अध्यायों का वह भाग शायद एक आरंभिक लेखन है कि जिन पुरुषों को उस देश का सर्वेक्षण करने के लिए भेजा था वे अपने विवरण के साथ वापस आए... अध्याय 24 हमें बताता है कि यहोशू ने व्यवस्था की पुस्तक में लिखा जिसमें शायद कम से कम वह वाचा शामिल थी जो वह उस समय इस्राएल की संतान के साथ बाँध रहा था। यह शायद व्यवस्था की वही पुस्तक थी जो मूसा ने लिखी थी, और यह सुझाव इसलिए दिया गया है क्योंकि यहोशू उसे यहोवा के सामने स्थापित करेगा — वह इसे लिखता है; वह इसे यहोवा के सामने रखता है — वैसे ही जैसे मूसा की लिखी सामग्री को यहोवा के



चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

> सामने रखा गया था, स्पष्ट है कि पवित्र वस्तु के रूप में मिलापवाले तंबू में। और इसलिए, यहोशू की पुस्तक के इस भाग का उल्लेख शायद यहोशू की पुस्तक में ही किया गया है। यदि यह सच है कि हमारे पास उस देश का वर्णन है, और हमारे पास उस वाचा का विवरण भी है जो यहोशू की पुस्तक के अंत में पाया जाता है, तो शायद यह सच है कि युद्धों से संबंधित अन्य विवरण जिनमें बहुत सी बातों का वर्णन है, उन्हें भी शायद बहुत आरंभ में और यहोशू के द्वारा सब अभिप्रायों और उद्देश्यों के साथ लिखा गया।
>
> — डॉ. चिप मैकडेनियल

यहोशू की पुस्तक के लेखक और लेखन के समय पर आधारित इन पारंपरिक दृष्टिकोणों को ध्यान में रखते हुए, आइए आधुनिक आलोचनात्मक दृष्टिकोणों पर ध्यान दें — अर्थात् उन आधुनिक विद्वानों द्वारा रखे गए दृष्टिकोण जो पवित्रशास्त्र के पूर्ण अधिकार को ठुकरा देते हैं।

## आलोचनात्मक दृष्टिकोण

यहोशू से संबंधित हाल ही के अधिकांश आलोचनात्मक विद्वान 1943 में लिखित मार्टिन नोथ की पुस्तक, *दी डयूटरोनोमिस्टिक हिस्ट्री* से गहराई से प्रभावित हैं। सारांश में, नोथ का दृष्टिकोण यह था कि व्यवस्थाविवरण, यहोशू, न्यायियों, शमूएल, और राजाओं की पुस्तकें बेबीलोनी निर्वासन के दौरान किसी ऐसे व्यक्ति के द्वारा लिखी गई जिसे "व्यवस्थावादी" कहा जाता था। और इस दृष्टिकोण से व्यवस्थाविवरण की पुस्तक सहित संपूर्ण व्यवस्थाविवरण-संबंधी इतिहास की रचना बेबीलोनी निर्वासन के दौरान पहले के लिखित विविध स्रोतों से की गई थी। इन पुस्तकों का मुख्य उद्देश्य यह दर्शाना था कि इस्राएल पराजय के दंड और उस निर्वासन के लायक था जो उत्तरी और दक्षिणी राज्यों पर आ पड़ा था।

दशकों से अधिकांश आलोचनात्मक व्याख्याकारों ने नोथ के कई मुख्य दृष्टिकोणों की पुष्टि की है, विशेषकर बेबीलोनी निर्वासन के दौरान पुस्तक के लेखन के समय के विषय में। फिर भी, कई आलोचनात्मक विद्वानों ने उचित तर्क दिया है कि नोथ पुराने नियम के इस भाग की अलग-अलग पुस्तकों के विशिष्ट धर्मवैज्ञानिक दृष्टिकोणों को पहचानने में असफल रहा। और उन्होंने तर्क दिया है कि नोथ ने उन सकारात्मक, आशापूर्ण दृष्टिकोणों को भी अनदेखा किया जो इन पुस्तकों में पाए जाते हैं।

अपनी पुस्तक के लेखक और लेखन के समय से संबंधित पारंपरिक और आलोचनात्मक दृष्टिकोणों पर ध्यान देने के बाद, आइए कुछ सुसमाचारिक दृष्टिकोणों पर विचार करें — अर्थात् ऐसे विद्वानों द्वारा रखे जानेवाले दृष्टिकोणों पर जो पवित्रशास्त्र के पूरे अधिकार की पुष्टि करते हैं। ये दृष्टिकोण इस पूरे अध्याय में यहोशू की पुस्तक के प्रति हमारे दृष्टिकोण का नेतृत्व करेंगे।

## सुसमाचारिक दृष्टिकोण

जैसा कि हम पहले ही देख चुके हैं, यहोशू की पुस्तक के लेखक का नाम नहीं दिया गया है। और फलस्वरूप, सुसमाचारिक लोगों के पास इसके लेखक और लेखन के समय के विषय में कई भिन्न-भिन्न दृष्टिकोण रहे हैं। फिर भी, दो बातों को देखना सहायक होगा। पहली, हम वह देखेंगे जिसे हम पुस्तक का संरचनात्मक विकास कह सकते हैं। और दूसरी, हम इसकी पूर्णता के संभावित समयों के दायरे को खोजेंगे। आइए पहले यहोशू की पुस्तक के संरचनात्मक विकास पर विचार करें।

## विकास

जब हम अपनी पुस्तक के विकास के बारे में बात करते हैं, तो पुराने नियम के अन्य कई लेखकों के समान हमारे मन में भी यही होता है कि यहोशू के लेखक ने अपने इतिहास को बिल्कुल शून्य या आरंभ से नहीं लिखा। बल्कि उसने अपनी पुस्तक की रचना करते हुए कई विविध लिखित स्रोतों को संकलित किया। जैसा कि हमने अभी देखा, *तलमूड* और आलोचनात्मक व्याख्याकारों दोनों ने यह बनाए रखा कि हमारी पुस्तक किसी प्रकार के संरचनात्मक विकास को दर्शाती है। और सामान्यतः सुसमाचारिक लोग भी हमारे लेखक के द्वारा स्रोतों के प्रयोग को मानते हैं।

हम निश्चित रूप से जानते हैं कि कुछ सीमा तक यह सच है क्योंकि पद 10:13 में हमारे लेखक ने प्रत्यक्ष रूप से उसे उद्धृत किया जिसे उसने *जशर की पुस्तक* — या हस्तलेख — कहा। हम पुस्तक के विषय में ज्यादा कुछ नहीं जानते, परंतु स्पष्ट रूप से लेखक और उसके मूल पाठक अवश्य जानते थे। इससे बढ़कर, जैसे कि हम इस पूरी श्रृंखला में यह देखते हैं, हमारे लेखक ने बार-बार पंचग्रंथ और बाइबल से बाहर के भी कई प्रकार के लेखनों को शामिल किया। हम बहुत सी कल्पनाएँ किए बिना इन अज्ञात स्रोतों का पुनर्निर्माण नहीं कर सकते। परंतु यह जानना कि हमारे लेखक ने पहले के स्रोतों का प्रयोग किया, जैसे कि *जशर की पुस्तक,* हमें यह समझने में सहायता करता है कि क्यों उसकी पुस्तक कई बार दोहरावपूर्ण और असंबद्ध प्रतीत होती है।

पहले के स्रोतों का प्रयोग हमें अपनी पुस्तक के अंतिम रूप दिए जाने के समय को पहचानने में भी आम गलती को दूर रखने में सहायता करता है। पंद्रह अवसरों पर यहोशू की पुस्तक कहती है कि यह और वह परिस्थिति "आज तक" पाई जाती है। स्वाभाविक रूप से, यह सोचना सरल है कि वाक्यांश "आज तक" लेखक के समय को दर्शाता है। परंतु जैसा कि यह स्पष्ट रूप से 1 राजाओं 8:8 जैसे अनुच्छेद में है, कई बार "आज तक" वाक्यांश वास्तव में पहले के स्रोतों के दिनों को भी दर्शा सकता है।

यद्यपि सुसमाचारिक लोग आम तौर पर सहमत होते हैं कि यहोशू की पुस्तक का एक संरचनात्मक विकास था, फिर भी हम यह पूछते हैं कि इस पुस्तक की पूर्णता कब हुई थी? इस पुस्तक को इस रूप में कब संकलित किया गया जैसी यह आज हमारे पास बाइबल में है।

## पूर्णता

पुराने नियम की कई अन्य पुस्तकों के समान हम सटीक रूप से यह नहीं जान सकते कि कब हमारे लेखक ने यहोशू की पुस्तक को इसके अंतिम रूप में पहुँचाया था। प्रमाण हमें आरंभिक और नवीनतम संभावित समयों की एक श्रृंखला को ही पहचानने में हमारी सहायता करते हैं। परंतु जैसा कि हम इन अध्यायों में देखेंगे, जब हम संभावनाओं की इस पूरी श्रृंखला को मन में रखते हैं तो हम कई अंतर्दृष्टियाँ प्राप्त करते हैं कि कैसे हमारे लेखक ने मूल पाठकों को प्रभावित करने के लिए अपनी पुस्तक को आकार दिया था।

हम यहोशू की पुस्तक की पूर्णता के लिए दो चरणों में समय की इस श्रृंखला को देखेंगे। पहला, हम इसकी नवीनतम संभावित समयावधि के बारे में विचार करेंगे। और दूसरा, हम इसकी सबसे आरंभिक संभावित समयावधि की जाँच करेंगे। आइए हम नवीनतम संभावित समयावधि के साथ शुरू करें जब यहोशू की पुस्तक लिखी गई हो सकती है।

यहोशू की पुस्तक की अंतिम पूर्णता की नवीनतम संभावित समयावधि को निर्धारित करने का एक सर्वोत्तम तरीका पुस्तक के बाहर से प्रमाणों को ढूँढना है। इस बात का बड़ा प्रमाण है कि हमारे लेखक ने उसमें योगदान दिया जिसे कई विद्वान आज इस्राएल का प्राथमिक इतिहास कहते हैं — अर्थात् वह इतिहास जो रूत सहित उत्पत्ति से लेकर राजाओं तक चलता है। यह दृष्टिकोण महत्वपूर्ण है क्योंकि ये पुस्तकें एक के बाद एक कड़ी के रूप में एक समय-रेखा की रचना करती हैं।



चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

इसके बारे में इस प्रकार सोचें : पंचग्रंथ मूसा के दिनों से आता है और इस ऐतिहासिक "श्रृंखला" में पांच कड़ियों के पहले समूह को शामिल करता है। उत्पत्ति की पुस्तक सृष्टि के साथ आरंभ होती है और मिस्र में यूसुफ और उसके भाइयों के साथ समाप्त होती है। निर्गमन की पुस्तक उत्पत्ति के अस्तित्व को मानती है क्योंकि यह इतिहास को यूसुफ की मृत्यु से आरंभ करती है और इसकी समाप्ति मूसा और इस्राएल के सीनै पर्वत पर पहुँचने के समय होती है। लैव्यव्यवस्था उन घटनाओं का विवरण देने के द्वारा हमें आगे लेकर जाती है जो सीनै पर्वत पर घटीं। गिनती की पुस्तक सीनै पर्वत से मोआब के मैदानों तक इस्राएलियों की यात्रा के विवरण को जोड़ती है। और व्यवस्थाविवरण की पुस्तक मोआब के मैदानों में मूसा के भाषणों और मूसा की मृत्यु के साथ पंचग्रंथ को पूरा करती है।

इसी प्रकार से यहोशू की पुस्तक प्राथमिक इतिहास के अनुवर्ती व्यवस्थावादी भाग की पहली कड़ी है — अर्थात् वह भाग जो व्यवस्थाविवरण की पुस्तक के धर्मवैज्ञानिक दृष्टिकोणों पर बहुत अधिक निर्भर था। यहोशू का लेखक मूसा की मृत्यु के साथ आरंभ करता है और यहोशू की मृत्यु तक जारी रखता है। न्यायियों की पुस्तक वहाँ से इस्राएल के इतिहास को लेती है जहाँ यहोशू की पुस्तक छोड़ती है। शमूएल की पुस्तक इस्राएल के अंतिम न्यायी के रूप में शमूएल के उदय के साथ आरंभ होती है और दाऊद के राज्य के साथ समाप्त होती है। और राजाओं की पुस्तक दाऊद की मृत्यु के साथ शुरू होने और बेबीलोनी निर्वासन के साथ समाप्त होने के द्वारा प्राथमिक इतिहास के अंतिम चरण की रचना करती है। इस भाव में, राजाओं की पुस्तक व्यवस्थावादी इतिहास की पहले की *सारी* पुस्तकों से बहकर निकलती है। और यह तथ्य हमें यहोशू की पुस्तक की पूर्णता के संभावित नवीनतम समय के विषय में महत्वपूर्ण बात बताता है। यह लाजमी है कि यहोशू की पुस्तक राजाओं की पुस्तक के लिखे जाने से पहले पूरी हो गई थी।

यह अवलोकन सहायक है क्योंकि हम इसके विषय में काफी कुछ जानते हैं कि राजाओं की पुस्तक कब लिखी गई थी। राजाओं की पुस्तक में उल्लिखित अंतिम घटना का वर्णन 2 राजाओं 25:27-30 में किया गया है। यहाँ हम देखते हैं कि दाऊद का राजकीय वंशज यहोयाकीन को 561 ईसा पूर्व में बेबीलोन की कैद से छोड़ा गया था। इसी कारण, हम आश्वस्त हो सकते हैं कि राजाओं की पुस्तक इस समयावधि से पहले पूरी नहीं हुई थी। और यही नहीं, राजाओं की पुस्तक 538 ईसा पूर्व में घटित इस्राएल के सबसे महत्वपूर्ण छुटकारे का विवरण नहीं देती है। यह सोचना अकल्पनीय है कि राजाओं की पुस्तक के लेखक ने निर्वासन से इस्राएल के छुटकारे का उल्लेख न किया हो यदि वह छुटकारा उसी समय हुआ हो जब उसने राजाओं की पुस्तक लिखी थी। अतः इस्राएल के प्राथमिक इतिहास के क्रम के अनुसार यहोशू की पुस्तक के पूरे होने की नवीनतम समयावधि बेबीलोनी निर्वासन के दौरान थी।

इस नवीनतम संभावित समयावधि को मन में रखते हुए हमें अन्य दिशाओं में भी देखना चाहिए। यहोशू की पुस्तक की पूर्णता की आरंभिक संभावित समयावधि क्या थी? यह देखना कठिन नहीं है कि न्यायियों की समयावधि, अर्थात् यहोशू की मृत्यु के बाद की अगली पीढ़ी तक यहोशू की पुस्तक अपने अंतिम रूप में पहुँच गई होगी। ध्यान दीजिए कि हमारे लेखक ने अपनी पुस्तक के लगभग अंत में पद 24:31 में क्या लिखा :

> **यहोशू के जीवन भर, और जो वृद्ध लोग यहोशू के मरने के बाद जीवित रहे और जानते थे कि यहोवा ने इस्राएल के लिये कैसे कैसे काम किए थे, उनके भी जीवन भर इस्राएली यहोवा ही की सेवा करते रहे (यहोशू 24:31)।**

ध्यान दें कि यह अनुच्छेद उनका वर्णन करता है "जो वृद्ध लोग यहोशू के मरने के बाद जीवित रहे।" इसी के साथ-साथ हम यह भी पढ़ते हैं कि उनके जीवनभर जो "जानते थे कि यहोवा ने इस्राएल के लिये कैसे कैसे काम किए थे, उनके भी जीवन भर इस्राएली यहोवा ही की सेवा करते रहे।" इस्राएल की आत्मिक दशा के विषय में यह सकारात्मक मूल्यांकन हमारे लेखक के विषय में कुछ दर्शाता है। वह इस



चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

बात के विषय में अवगत रहा होगा कि यहोशू की मृत्यु से बाद की पीढ़ी ने विश्वासयोग्यता के साथ परमेश्वर की सेवा करना जारी नहीं रखा — वह तथ्य जो न्यायियों की पुस्तक में प्रकट किया गया। अतः यह पद दर्शाता है कि हमारी पुस्तक की आरंभिक संभावित समयावधि इस्राएल के न्यायियों की समयावधि थी।

यहोशू के अन्य अनुच्छेद भी उन घटनाओं को दर्शाते हैं जो न्यायियों के समय के दौरान घटी थीं। उदाहरण के तौर पर, यहोशू 19:47 उत्तर में दानियों के एक नए क्षेत्र में प्रवास का उल्लेख करता है। न्यायियों 18:27-29 के अनुसार यह घटना न्यायियों के समय में घटी थी। अतः यह कहना ठीक होगा कि यह इस पुस्तक की पूर्णता की आरंभिक संभावित समयावधि है।

अब हमें यह उल्लेख भी करना चाहिए कि बहुत से व्याख्याकारों ने राजतंत्र की समयावधि के दौरान के समय का तर्क दिया है। कई कारणों से, उन्होंने निष्कर्ष निकाला है कि यह वास्तव में इस पुस्तक की अंतिम पूर्णता की सबसे आरंभिक संभावित समयावधि है। और हम इस संभावना को नकार नहीं सकते। इस दृष्टिकोण का प्राथमिक प्रमाण यहोशू 11:21 में प्रकट होता है जहाँ हम इन वचनों को पढ़ते हैं :

> **उस समय यहोशू ने पहाड़ी देश में आकर... यहूदा और इस्राएल दोनों के सारे पहाड़ी देश में रहनेवाले अनाकियों को नष्ट किया (यहोशू 11:21)।**

जैसा कि हम यहाँ देखते हैं, यह पद "यहूदा और इस्राएल दोनों के सारे पहाड़ी देश" के रूप में दक्षिणी और उत्तरी राज्यों को अलग-अलग दर्शाता है।

यहूदा और इस्राएल के बीच के अंतर ने कुछ लोगों को सोचने को विवश किया है हमारी पुस्तक लगभग 930 ईसा पूर्व में हुए इस्राएल के विभाजन से पहले नहीं लिखी गई होगी। परंतु यह कहने के बावजूद भी इस बात पर ध्यान देना महत्वपूर्ण है कि सेप्टूआजिंट, अर्थात् पुराने नियम के प्राचीन यूनानी अनुवाद का एक संस्करण इस अंतर को स्पष्ट नहीं करता। और विद्वान इस बात पर असहमत होते हैं कि इब्रानी या फिर यूनानी संस्करण बेहतर लेखन को प्रस्तुत करता है। अतः जबकि यह *संभव* है कि यहोशू 11:21 राज्यों के विभाजन की बात करता है, फिर भी यह *निश्चित* नहीं है।

यदि हम इस सारे प्रमाण को एक साथ रखते हैं, तो यहोशू की पुस्तक की पूर्णता की सबसे आरंभिक संभावित समयावधि लगभग न्यायियों की समयावधि के दौरान थी। परंतु राजतंत्र के दौरान की एक बाद की समयावधि भी संभव है। और यहाँ तक कि बेबीलोनी निर्वासन की समयावधि को भी नाकारा नहीं जा सकता। जैसा कि हम अभी देखेंगे, संभावनाओं के इस पूरे दायरे को देखना उन सारी चुनौतियों को पूरी तरह से समझने में सहायता करता है जिन्हें संबोधित करने के लिए यहोशू की पुस्तक की रचना की गई थी।

यहोशू की पुस्तक के लेखक और लेखन की समयावधि के विषय में जो हमने सीखा है उसे मन में रखते हुए अब हमें दूसरे परिचयात्मक विचार-विमर्श की ओर मुड़ना चाहिए : पुस्तक की रूपरेखा और उद्देश्य। हमारे लेखक ने किस प्रकार यहोशू के समय के विवरण की रूपरेखा तैयार की? और उसने इसकी रूपरेखा इस प्रकार क्यों तैयार की?

## रूपरेखा और उद्देश्य

जब भी हम यहोशू की पुस्तक जैसे बाइबल के इतिहास की पुस्तक का अध्ययन करते हैं, तो यह याद रखना हमेशा महत्वपूर्ण होता है कि त्रुटियों को बताए बिना समान ऐतिहासिक घटनाओं को कई रूपों

में बताया जा सकता है। बाइबल की वह प्रत्येक पुस्तक जो ऐतिहासिक घटनाओं का वर्णन करती है वह उस इतिहास को इस रूप में रखती है कि कुछ विशेष उद्देश्यों को पूरा करे और अपने मूल पाठकों के लिए कुछ दृष्टिकोणों पर बल दे।

हम आगे के अध्यायों में इन विषयों को और अधिक विस्तार से देखेंगे, परंतु इस समय हम दो चरणों में यहोशू की रूपरेखा और उद्देश्य का वर्णन करेंगे। पहला, हम इसकी व्यापक विषय-वस्तु और संरचना, अर्थात् पुस्तक की व्यापक सजावट का परिचय देंगे। और दूसरा, हम इसके मूल अर्थ, अर्थात् उस प्रभाव पर टिप्पणी करेंगे जो हमारा लेखक अपने मूल पाठकों पर छोड़ना चाहता था। आइए पहले हम यहोशू की पुस्तक की विषय-वस्तु और संरचना पर ध्यान दें।

## विषय-वस्तु और संरचना

यहोशू की पुस्तक में चौबीस अध्याय पाए जाते हैं जिनमें कई प्रकार के साहित्य पाए जाते हैं। उनमें हम ऐतिहासिक विवरणों, वर्णनों, व्याख्यानों, और ऐसे लोगों तथा स्थानों की सूची पाते हैं जो शायद विविध स्रोतों से आए थे। इस कारण, व्याख्याकारों ने यहोशू की पुस्तक के संरचनात्मक *विवरणों* का अलग-अलग तरीकों से विश्लेषण किया है। परंतु यह देखना कठिन नहीं है कि कैसे इसकी संरचना और विषय-वस्तु व्यापक स्तर पर एक साथ कार्य करती हैं।

> पुराने नियम के विद्वानों के पास बाइबल की विभिन्न पुस्तकों में पाए जानेवाली साहित्यिक शैली को स्थापित करने या पहचानने के विभिन्न तरीके हैं, परंतु सामान्य रूपों में, यहोशू की पुस्तक में तीन मुख्य प्रकार की साहित्यिक शैलियाँ हैं। इसमें ऐतिहासिक विवरण या कहानियाँ हैं, ऐसी चीजें जिन्हें हम आम तौर पर समझ लेते हैं, जैसे यरीहो की लड़ाई इत्यादि। इसमें ऐसे स्थानों की भौगोलिक सूचियाँ हैं जिन्हें अलग-अलग गोत्रों ने प्राप्त किया; ये स्थान उन्हें परमेश्वर के द्वारा दिए गए थे जिनका वर्णन एक के बाद एक वहाँ पाया जाता है। और फिर उसमें ऐसे खंड भी हैं जहाँ कोई भाषण या कई भाषण हैं जिन्हें एक व्यक्ति के द्वारा लोगों के किसी दूसरे समूह को दिया गया। और आप देख सकते हैं कि यदि आप इसके बारे में उन तीन बड़ी श्रेणियों में सोचते हैं, जो मोटे तौर पर पहले प्रमुख विभाजन और दूसरे प्रमुख विभाजन और पुस्तक के तीसरे प्रमुख विभाजन से संबंधित हैं। पहला मुख्य रूप से ऐतिहासिक वर्णन है, दूसरा मुख्य रूप से भौगोलिक सूचियाँ है, और तीसरा मुख्य रूप से भाषण है। परंतु समस्या इस तरह से सामने आती है, और वह यह है कि उन प्रमुख या छत्र शैलियों के भीतर भी आपके पास हमेशा दो अन्य प्रकार की शैलियाँ आ ही जाती हैं... और इसलिए, जब हम यहोशू की पुस्तक में इन विभिन्न खंडों और इन विभिन्न शैलियों के बारे में चर्चा करते हैं, तो उन्हें ध्यान में रखना और जब आप आगे बढ़ते हैं तो उन्हें देख पाना बहुत महत्वपूर्ण है। व्याख्याकारों के लिए, विशेषकर पुराने नियम के नए व्याख्याकारों या नए विद्यार्थियों के लिए, असमंजस का एक सबसे बड़ा बिंदु यह है कि वे इन विभिन्न शैलियों को नहीं पहचानेंगे और उनके साथ वैसा व्यवहार नहीं करेंगे, जैसा उन्हें करना चाहिए। और जब हम यहोशू की पुस्तक की ओर बढ़ते हैं, जब कोई भी यहोशू की पुस्तक की ओर बढ़ता है, यदि आप उन विभिन्न शैलियों पर ध्यान केंद्रित नहीं करते, और इस पर भी कि पुस्तक के विभिन्न भागों में वे कैसे एक साथ जुड़ी हुई हैं, तो यह एक बड़े असमंजस की ओर ले जाएगा।
>
> — डॉ. रिचर्ड, एल. प्रैट, जूनियर



चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

सारांश में, यहोशू की पुस्तक में तीन मुख्य विभाजन हैं। प्रत्येक विभाजन समय में एक महत्वपूर्ण परिवर्तन को दर्शानेवाले कथन के साथ आरंभ होता है। अध्याय 1-12 में पहला विभाजन कनान पर इस्राएल की जयवंत विजय पर ध्यान देता है — किस प्रकार यहोशू ने कनानियों पर विजय पाने के लिए इस्राएल की अगुवाई की। यह विभाजन 1:1 में अस्थाई सूचना के साथ आरंभ होता है कि परमेश्वर ने "मूसा की मृत्यु के बाद" यहोशू को कार्यभार सौंपा।

## जयवंत विजय (1–12)

ये बारह अध्याय ऐसी कई घटनाओं के बारे में बताते हैं जो कनान देश पर यहोशू द्वारा विजय पाने के दौरान घटीं। वे इस्राएल द्वारा यरदन नदी को पार करने और यरीहो तथा ऐ नगर पर आरंभिक विजय के साथ आरंभ होते हैं। इन विजयों के बाद गरिज्जीम पर्वत और एबाल पर्वत के क्षेत्र में वाचा का नवीनीकरण किया गया। इसके बाद यह विवरण प्रतिज्ञा के देश के दक्षिणी क्षेत्रों के एक गठबंधन के विरुद्ध चलाए गए यहोशू के मुख्य अभियान की ओर बढ़ता है। और इस विवरण के बाद उत्तरी क्षेत्रों के एक गठबंधन के विरुद्ध यहोशू का अभियान है।

## गोत्रों को उनका उत्तराधिकार दिया जाना (13–22)

अध्याय 13–22 में हमारी पुस्तक का दूसरा विभाजन इस्राएल के गोत्रों के उत्तराधिकार के बारे में बात करता है — किस प्रकार इस्राएल की राष्ट्रीय एकता को बनाए रखा गया जब इस्राएल के गोत्रों को उनका उत्तराधिकार बांटा गया। यह विभाजन पद 13:1 में इस अस्थाई कथन के साथ आरंभ होता है, "यहोशू बूढ़ा और बहुत उम्र का हो गया था।"

यहोशू की पुस्तक के इस दूसरे मुख्य विभाजन ने उन क्षेत्रों की सीमाओं को स्थापित किया जो परमेश्वर ने इस्राएल को दिए थे — यरदन नदी के पूर्वी ओर की भूमि तथा यरदन नदी के पश्चिमी ओर की भूमि दोनों में। यह उन गोत्रों को भूमि के विशिष्ट आवंटन के विषय में कुछ विस्तार से बताता है जिन्हें यरदन के पूर्वी ओर बसने की अनुमति मिली थी। और यह इस बात को भी बताता है कि कैसे परमेश्वर ने यरदन नदी के पश्चिम में यहूदा, एप्रैम और मनश्शे को बड़े-बड़े क्षेत्र, तथा इस्राएल के अन्य गोत्रों को छोटे-छोटे क्षेत्र प्रदान किए। और जब यरदन के पूर्वी तथा पश्चिमी क्षेत्र के गोत्रों के बीच विवाद हुआ, तो हम देखते हैं कि कैसे उन्होंने परमेश्वर के लोगों के रूप में राष्ट्रीय एकता को बनाए रखा।

## वाचाई विश्वासयोग्यता (23–24)

अध्याय 23, 24 में आनेवाला तीसरा मुख्य विभाजन इस्राएल की वाचाई विश्वासयोग्यता पर ध्यान देने के द्वारा हमारी पुस्तक का अंत करता है — किस प्रकार परमेश्वर की वाचा की शर्तों के प्रति इस्राएल की विश्वासयोग्यता और विश्वासघात उनके भविष्य को प्रभावित करेगा। यह पद 23:1 में एक और कथन के साथ आरंभ होता है जो हमें समय के बीतने के विषय में सचेत करता है। हम वहाँ यह पढ़ते हैं, "इसके बहुत दिनों के बाद, जब... यहोशू बूढ़ा और बहुत आयु का हो गया।" और यह अस्थाई सूचना को पद 14 में यहोशू के शब्दों में और बल से दर्शाया गया है, "सुनो, मैं तो अब सब संसारियों की गति पर जानेवाला हूँ।"

हमारी पुस्तक के ये अंतिम दो अध्याय उन दो सभाओं पर ध्यान केंद्रित करते हैं जिनका आयोजन यहोशू ने अपनी मृत्यु के निकट किया। इनमें से पहली सभा हो सकता है शीलो में हुई हो, जो वह पवित्र स्थान है जिसने यहोशू के समय और बाद में न्यायियों के समय में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। और यह शेकेम में अंतिम सभा के साथ समाप्त होती है, वह स्थान जहाँ अब्राहम ने कनान देश में अपनी पहली वेदी बनाई थी। सारा इस्राएल इन सभाओं में एकत्रित हुआ, और यहोशू ने उन्हें परमेश्वर की व्यवस्था के उल्लंघन के विरुद्ध चेतावनी दी। तब हमारी पुस्तक का मुख्य भाग इस्राएल के लोगों के केवल परमेश्वर के



चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

प्रति विश्वासयोग्य रहने के उनके समर्पण को नया करने में यहोशू की अगुवाई के साथ समाप्त होता है। उन्होंने सब अन्यजातियों के देवताओं को ठुकराने और उनके साथ बाँधी गई वाचा की शर्तों के अनुसार केवल उनके पूर्वजों के परमेश्वर की सेवा करने की शपथ खाई। इस वाचाई नवीनीकरण के बाद यहोशू की पुस्तक उन बाद के कथनों के साथ समाप्त होती है जिसमें यहोशू की मृत्यु तथा बाद की कई घटनाओं का उल्लेख है।

हमने पुस्तक की विषय-वस्तु और संरचना पर ध्यान देने के द्वारा यहोशू की पुस्तक की रूपरेखा और उद्देश्य का अध्ययन कर लिया है। अब हम यह पूछने की स्थिति में हैं कि हमें यहोशू की पुस्तक के मूल अर्थ को कैसे सारगर्भित करना चाहिए। अपनी पुस्तक को लिखने के पीछे हमारे लेखक का उद्देश्य क्या था?

## मूल अर्थ

कई रूपों में, यह कहना सही होगा कि यहोशू की पुस्तक के लेखक ने उन्हीं उद्देश्यों के साथ लिखा जो बाइबल के अन्य लेखकों के भी थे। उसने परमेश्वर को सम्मान देने के लिए अपनी पुस्तक की रचना की। और उसने अपने मूल पाठकों की अवधारणाओं, व्यवहारों और भावनाओं के साथ परमेश्वर की वाचा के सिद्धांतों को लागू करने के द्वारा परमेश्वर के राज्य को आगे बढ़ाने का प्रयास किया। परंतु जब हम यहोशू की पुस्तक का अध्ययन करते हैं, तो हम उन विशेष महत्वों को भी पहचान सकते हैं जो हमारे लेखक ने अपनी पुस्तक लिखते समय अपने पाठकों के लिए रखे थे।

यहोशू के मूल अर्थ को सारगर्भित करने के कई तरीके हैं, परंतु हमारे उद्देश्यों के लिए, हम इसे इस प्रकार व्यक्त करेंगे :

> यहोशू की पुस्तक यहोशू के समय में इस्राएल की जयवंत विजय, गोत्रों को उनका उत्तराधिकार देने और वाचाई विश्वासयोग्यता के विषय में लिखी गई थी ताकि बाद की पीढ़ियों के सामने आने वाली ऐसी ही चुनौतियों को संबोधित किया जा सके।

जैसा कि हम देख सकते हैं, यह सारांश यहोशू की पुस्तक के तीन मुख्य विभाजनों को दर्शाता है : जयवंत विजय, गोत्रों को उनका उत्तराधिकार देना और वाचाई विश्वासयोग्यता। परंतु हमारे लेखक ने इन विषयों पर ध्यान केंद्रित क्यों किया? जैसे कि हमारा सारांश सुझाव देता है, पहला, उसने अपने पाठकों को यहोशू के समय की घटनाओं को याद दिलाने का प्रयास किया। और दूसरा, उसने बाद की पीढ़ियों को और उन चुनौतियों को संबोधित करने के लिए लिखा जिनका उन्होंने सामना किया था। आइए हम इस बात के साथ शुरू करते हुए इन दोनों उद्देश्यों को देखें कि हमारे लेखक ने यहोशू के समय *के विषय में* क्यों लिखा।

यहोशू की पुस्तक से परिचित प्रत्येक व्यक्ति यह जानता है कि यह केवल उन्हीं घटनाओं को दर्शाती है जो तब घटीं जब यहोशू इस्राएल की अगुवाई कर रहा था। इनमें ये घटनाएँ शामिल हैं : इस्राएल की कनान पर जयवंत विजय, यहोशू द्वारा इस्राएल के गोत्रों को उनके उत्तराधिकार का बँटवारा, और परमेश्वर के प्रति इस्राएल की वाचाई विश्वासयोग्यता। अतः यह कहना उचित होगा कि हमारे लेखक का एक मुख्य उद्देश्य मूल पाठकों को यह बताना था कि “उस संसार” — यहोशू के समय के संसार — में क्या हुआ था। पुराने नियम के बहुत से अनुच्छेद बल देते हैं कि इस्राएली अक्सर अपना रास्ता भटक गए थे क्योंकि वे भूल गए थे कि परमेश्वर ने अतीत में उनके लिए क्या-क्या किया था। हमारे लेखक ने पद 24:31 में संकेत दिया कि यह उसके मूल पाठकों के लिए समस्या बन गया जब उसने अपने आप को और



चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

अपने पाठकों को उनसे अलग किया जो "जानते थे कि यहोवा ने इस्राएल के लिये कैसे कैसे काम किए थे।"

हमारी पुस्तक के मूल पाठकों को यह याद दिलाए जाने की जरूरत थी कि यहोशू के समय में क्या-क्या हुआ था, फिर चाहे वे न्यायियों के समय में रहते हों या फिर राजतंत्र के समय में, या बेबीलोनी निर्वासन के दौरान। अतः मूलभूत रूप में, हम यह कह सकते हैं कि यहोशू की पुस्तक के लेखक ने अपने मूल पाठकों को इस बात का सच्चा विवरण प्रदान करने के लिखा कि यहोशू के समय में क्या हासिल किया गया था।

दूसरा, जैसे कि हमारा सारांश सुझाव देता है, यहोशू की पुस्तक बाद की पीढ़ियों की चुनौतियों को संबोधित करने के लिए भी लिखी गई थी। हमारा लेखक दो संसारों के बीच खड़ा था : "वह संसार" — यहोशू के समय में इस्राएल का संसार — और "उनका संसार" — मूल पाठकों का संसार। इस कारण, हमारे लेखक ने केवल ऐसा विवरण ही नहीं लिखा जो ऐतिहासिक तथ्यों से मिलता-जुलता हो। उसने इस्राएल की जयवंत विजय, गोत्रों के उतराधिकार के बँटवारे और वाचाई विश्वासयोग्यता के बारे में भी लिखा ताकि वह "उस संसार" और "उनके संसार" के बीच अर्थपूर्ण संपर्क बिंदुओं या संबंधों को प्रदान कर सके। बाइबल के अन्य लेखकों के समान उसने बार-बार ऐसी ऐतिहासिक पृष्ठभूमियों को दर्शाया जिन्होंने उसके पाठकों के वर्तमान विशेषाधिकारों और दायित्वों के उद्‌गमों को स्पष्ट किया। उसने उनके सामने अनुसरण करने या ठुकराने के लिए आदर्श भी प्रस्तुत किए। और कुछ अवसरों पर उसने यहोशू के विवरणों को उसके मूल पाठकों के अनुभवों के पूर्वानुमानों के रूप में लिखा।

इस प्रकार के संबंध हमारे लेखक के विषय में कुछ प्रकट करते हैं जिसे हमें अपने सामने रखना जरूरी है। एक ओर, वह चाहता था कि उसके पाठक याद करें कि यहोशू के समय में क्या हुआ था। परंतु दूसरी ओर, वह नहीं चाहता था कि वे बिल्कुल वैसा ही करें जैसा इस्राएल के लोगों ने यहोशू के समय में किया था। उसके मूल पाठक एक अलग समय में रहते थे। और उन्हें उसके ऐतिहासिक विवरण को ऐसे रूपों में अपने जीवनों में लागू करना जरूरी था जो उनके अपने समय के लिए उचित थे।

> मेरा मानना है कि यहोशू की पुस्तक के मूल पाठक इसके संदेश से बहुत प्रभावित हुए थे... परमेश्वर द्वारा की गई सारी प्रतिज्ञाएँ प्रतिज्ञा के देश में आने के संबंध में इस्राएल के लिए पूरी हुईं। उनमें से एक भी पूरी हुए बिना नहीं रही। और मेरे विचार से लोगों को सिखाने के लिए मुख्य है कि परमेश्वर विश्वासयोग्य है; परमेश्वर विश्वासयोग्य रहा है और वह विश्वासयोग्य रहेगा। और यह विशेष रूप से उनके न्यायियों के समय में जाने में महत्वपूर्ण है, क्योंकि न्यायियों के समय में हम उन्हें एक ऐसी प्रजा के रूप में वर्णित पाते हैं जो वही करते हैं जो उनकी अपनी दृष्टि में सही था, परंतु उन्हें बुलाया इसलिए गया था कि वे यहोवा के विश्वासयोग्य बनें। और इसलिए, यह उनके लिए एक संदेश है कि वे यहोशू के जीवन और जो यहोशू के साथ-साथ विश्वासयोग्य थे उनके जीवन को उस प्रकाश में देखें जहाँ वे अब थे, जहाँ यह पीढ़ी सचमुच यहोशू का अनुसरण नहीं कर रही है। और यह उनके लिए बुलाहट थी कि वे सचमुच मन फिराएँ, और फिरकर ऐसे लोग बनें जैसा उन्हें बनने के लिए बुलाया गया था।
>
> — डॉ. टी. जे. बेट्स

अब आधुनिक व्याख्याकारों को यह समझने में मुश्किल होती है कि मूल पाठकों को अपने जीवनों में इस ऐतिहासिक प्रलेख को कैसे लागू करना था। आख़िरकार, हमारे लेखक ने इन विषयों को अपनी पुस्तक में नहीं लिखा। परंतु हमें कुछ दृष्टिकोणों को याद रखने की जरूरत है कि हमारे लेखक और

उसके पाठकों ने अपने समय में उपलब्ध पवित्रशास्त्र से सीखा होगा — जिसे हम पंचग्रंथ के रूप में जानते हैं। इन दृष्टिकोणों को मन में रखते हुए, "उनके संसार' के लिए "उस संसार" के बारे में हमारे लेखक के प्रलेख के अर्थ समझने के लिए उतने कठिन नहीं हैं जितने कठिन वे लगते हैं।

## जयवंत विजय

ध्यान दें कि कैसे पंचग्रंथ ने मूल पाठकों के लिए इस्राएल की जयवंत विजय के अर्थों को समझने के लिए मंच को तैयार किया। हमारी पुस्तक के इस विभाजन ने यहोशू की महान विजयों का विवरण प्रदान किया। परंतु युद्ध से संबंधित पंचग्रंथ से लिए गए तीन दृष्टिकोणों ने यह देखने में सहायता की कि वे यहोशू की पुस्तक के इस भाग को कैसे लागू करें।

**आदिकालीन संघर्ष —** पहला, हमारा लेखक और उसके मूल पाठक दोनों यह जानते थे कि वे ऐसे युद्ध में लगे हैं जो परमेश्वर और शैतान के आदिकालीन संघर्ष में स्थापित था। उत्पत्ति 3:15 दर्शाता है कि पूरे मानवीय इतिहास में मनुष्य के पाप में पतन के बाद परमेश्वर और शैतान के बीच एक संघर्ष रहा है। यह अदृश्य संघर्ष पृथ्वी पर सांप की संतान, या वंशों — अर्थात् शैतानी शक्तियों की सेवा करनेवाले लोगों — तथा स्त्री की संतान, या वंशों — अर्थात् परमेश्वर की सेवा करनेवाले लोगों के बीच स्पष्ट दिखाई देता है। इसी लिए यहोशू की पुस्तक इस्राएल के संघर्ष को केवल एक भौतिक युद्ध तक सीमित नहीं करती है। बल्कि यहोशू 5:14 में हमारे लेखक ने "यहोवा की सेना के प्रधान" का उल्लेख किया। यह अनुच्छेद दर्शाता है कि यहोशू और इस्राएल की सेना उस युद्ध में लड़ रही थीं जिसमें परमेश्वर और स्वर्गदूतों की सेना शामिल थी। और जैसे की यहोशू 23:16 जैसे अनुच्छेद दर्शाते हैं, हमारे लेखक ने यह भी माना कि कनान के झूठे देवता इस्राएल के लोगों के विरुद्ध क्नानियों के साथ खड़े हुए। यहोशू के मूल पाठकों के पास इस्राएल की विजय से सीखने के लिए बहुत कुछ था क्योंकि यहोशू के समय के इस्रालियों के समान वे जानते थे कि वे परमेश्वर और शैतान तथा उनकी सेवा करनेवालों के बीच चलनेवाले इस निरंतर संघर्ष में शामिल थे।

**इस्राएल का विशेष संघर्ष —** दूसरे, पंचग्रंथ ने इस बात को भी स्पष्ट किया कि यहोशू की विजय इस्राएल का विशेष संघर्ष था। जबकि मूल पाठकों ने इस्राएल की विजय से बहुत कुछ सीखा, फिर भी उन्हें, और आने वाली पीढ़ियों को उस हरेक बात का अनुसरण करना जरूरी नहीं था। पंचग्रंथ ने यह स्पष्ट किया कि यहोशू का समय विशेष था।

उत्पत्ति 15:13-16 में परमेश्वर ने अब्राहम से कहा कि उसके वंश के लोग कुछ समय के लिए मिस्र में दास होकर रहेंगे क्योंकि "अब तक एमोरियों" — कनानियों का दूसरा नाम — "का अधर्म पूरा नहीं हुआ है।" परंतु यहोशू की विजय के समय तक कनानियों का पाप इतना बढ़ चुका था कि परमेश्वर ने उनके संपूर्ण विनाश की बात कही, लगभग वैसे ही जैसे उसने अब्राहम के समय में सोदोम और अमोरा के विनाश की बात कही थी।

इसी लिए हमारे लेखक ने पंचग्रंथ के शब्दों को लिया और कनान के विनाश का वर्णन इब्रानी क्रिया *खरम* (חָרַם) और संज्ञा *खेरेम* (חֵרֶם) का प्रयोग करते हुए किया। जैसे कि यहोशू 6:17, 19 और 21 स्पष्ट करते हैं, यहोशू की विजय के संदर्भ में इन शब्दों का अर्थ केवल "नाश करना" ही नहीं था। बल्कि उनका अर्थ था, "यहोवा के प्रति पूरी तरह से समर्पित करना" या "यहोवा की भक्ति में नाश करना।" अतः जब इस्राएलियों ने कनान में युद्ध किया तो यह भयंकर कनानी पाप के विरुद्ध परमेश्वर के खरे दंड की स्वीकारोक्ति थी। और उन्होंने उस विजय में जिस किसी वस्तु पर अधिकार किया उसे आराधना में परमेश्वर को आदर देने के कार्य के रूप में नाश किया और समर्पित किया।

हम जानते हैं कि यहोशू के समय में पूरे विनाश और यहोवा के प्रति भक्ति की यह आज्ञा कई कारणों से विशेष थी। पहला, व्यवस्थाविवरण 20:10-20 में मूसा ने कनानियों के संपूर्ण विनाश की आज्ञा दी, परंतु उसने इस्राएल को कनान के देश से बाहर रहनेवाले लोगों के साथ शांति की वाचा बाँधने की



चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

आज्ञा दी। स्वयं यहोशू ने इस अंतर को यहोशू 9 में माना जब उसने गिबोनियों के साथ वाचा बाँधी, यह समझते हुए कि वे कनान के बाहर से आए थे।

इसके अतिरिक्त यहोशू की विजय का विशेष चरित्र तब स्पष्ट हो जाता है जब हम यह याद करते हैं कि कैसे परमेश्वर और शैतान के बीच चलनेवाने निरंतर संघर्ष ने यहोशू से पहले और बाद में अलग-अलग रूप लिए। कुछ उदाहरणों की यदि बात करें तो यहोशू से *पहले* उत्पत्ति 11:1-9 में परमेश्वर और उसकी स्वर्गीय सेना बाबेल के गुम्मट पर विद्रोही मनुष्यों के विरुद्ध युद्ध करने को गई। और उन्होंने यह सब बिना किसी मानवीय सेना के किया और और लोगों को बस तितर-बितर कर दिया। उत्पत्ति 14:1-24 में अब्राहम ने परमेश्वर की सहायता से युद्ध लड़ा परंतु परमेश्वर ने अब्राहम के शत्रुओं के संपूर्ण विनाश की आज्ञा नहीं दी। निर्गमन 12:12 में हम देखते हैं कि परमेश्वर मिस्रियों पर महामारियाँ डालने के समय मिस्रियों और उनके देवताओं के विरुद्ध युद्ध करने को गया। परंतु इस्राएल निष्क्रिय था, और परमेश्वर ने हरेक मिस्री को नहीं मारा। निर्गमन 14 में लाल समुद्र पर इस्राएल ने युद्ध के दौरान आज्ञाकारिता के साथ परमेश्वर का अनुसरण किया, परंतु मिस्र की सेना का विनाश परमेश्वर ने किया।

ऐसी ही विविधता यहोशू के समय के *बाद* भी दिखाई देती है। जैसे कि शमूएल की पुस्तक स्पष्ट करती है, दाऊद ने परमेश्वर की अलौकिक सहायता के द्वारा इस्राएल के बहुत से शत्रुओं से युद्ध किया। परंतु परमेश्वर ने उसके *सब* शत्रुओं को पूरी तरह से नाश नहीं किया। राजाओं की पुस्तक दर्शाती है कि दाऊद के राजकीय वंशजों की कई पीढ़ियों के साथ भी ऐसा ही था। और इस्राएल के भविष्यवक्ताओं ने भविष्यवाणी की कि इस्राएल के निर्वासन का अंत अद्वितीय, चमत्कारिक ईश्वरीय हस्तक्षेप के द्वारा हुए युद्ध के संबंध में प्रकट होगा।

जैसा कि हम देख सकते हैं, बुराई के साथ परमेश्वर का निरंतर संघर्ष पंचग्रंथ और पूरे पुराने नियम में कई रूपों में प्रकट हुआ। यह हमें इस सच्चाई के प्रति सचेत करता है कि यहोशू की विजय सारे युद्धों पर लागू होनेवाला कोई नियम नहीं था। निस्संदेह, मूल पाठक अपने समय से यहोशू की पुस्तक से युद्ध के विषय में बहुत सी बातें सीख पाए थे। परंतु वह विजय एक विशेष दंड का समय थी। अन्य कई युद्धों के विपरीत परमेश्वर ने उस समय निर्धारित किया कि कनानी — राहाब जैसे कुछ अपवादों के साथ — संपूर्ण विनाश के लायक थे।

> कनानियों का पाप समय के साथ-साथ धीरे-धीरे विशेष घृणित कामों में बदल गया था। उत्पत्ति की पुस्तक में, शायद उत्पत्ति 15 में, एमोरियों के अधर्म के पूरे हो जाने के प्रति एक संकेत है। ऐसा होने के बाद ही परमेश्वर के लोगों को उस देश का अधिकार मिलेगा। इसलिए पवित्रशास्त्र में ऐसा मत है कि परमेश्वर कनानियों के देश के पतन को देख रहा था और समझ रहा था कि जब उनका पतन एक निर्धारित सीमा तक पहुँच जाता है तब उसका न्याय उंडेला जाएगा।। उसके न्याय का माध्यम इस्राएल राष्ट्र है, परंतु इसलिए नहीं कि इस्राएली राष्ट्र के पास बड़ी नैतिक खराई या ऐसी कुछ बात थी। वे एक बहुत ही छोटा राष्ट्र हैं। उनके सामने भी अधर्म के बहुत से अवसर आए, जैसा कि हमने यहोशू से पहले की पीढ़ी में देखा है, और यहाँ तक कि विजय अभियान में भी अधर्म है। परंतु बात सचमुच यह है कि अपने अनुग्रह में परमेश्वर ने उस राष्ट्र को अपने लिए बुलाया है और वह उस राष्ट्र का प्रयोग एक ऐसे अन्य राष्ट्र का नाश करने या उसे हटाने के लिए कर रहा है जो यदि उसे वहाँ रहने दिया जाता है तो उसे भ्रष्ट बना देगा। और यह एक अन्य कारण है कि परमेश्वर ने इस्राएल राष्ट्र को कनान में जाने की अनुमति दी, और उन्हें वहाँ के सब जीवित प्राणियों को नष्ट करना था। परमेश्वर नहीं चाहता था कि उसके लोग धार्मिक क्रियाओं, उनकी मूर्तिपूजा, अर्थात् वहाँ रहनेवाले लोगों के अधर्म के कारण भ्रष्ट हो जाएँ, और वह नहीं चाहता था कि उसका राष्ट्र उसके



चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

> इर्द-गिर्द के राष्ट्रों के तरीकों के अनुसार चले। वह चाहता था कि वे उसे राजा मानकर उसका अनुसरण करें, उसके साथ चलें। और इसलिए, इस्राएल राष्ट्र उनके भीतर तो गया, परंतु निस्संदेह उसने उस कार्य को पूरा नहीं किया जो उन्हें सौंपा गया था। और इसलिए, यहोशू की पुस्तक में ही हम इसकी सुगबुगाहट को देखते हैं, जिसे हम पुस्तक की पूर्ण अभिव्यक्ति में देखते हैं — न्यायियों की पुस्तक — जिसके बाद इस्राएल राष्ट्र बहुत अधिक भ्रष्ट हो जाता है और अधिक से अधिक पाप और पतन में गिर जाता है, और उनमें उन लोगों का चरित्र बहुत ही कम पाया जाता है जो परमेश्वर के साथ वाचाई संबंध में बंधे हों, बल्कि वे अपने इर्द-गिर्द के राष्ट्रों के समान बन जाते हैं; यह वह था जो परमेश्वर ने इस्राएलियों को सब जीवित प्राणियों को नाश करने की आज्ञा देकर हटाने का प्रयास किया था।
>
> — रेव्ह. केविन लेबी

**इस्राएल के राजा की भविष्य की विजय —** तीसरा, हमार लेखक पंचग्रंथ से यह भी जानता था कि यहोशू की विजय इस्राएल के राजा की भविष्य की विजय की ओर केवल एक कदम है — अर्थात् भविष्य का वह राजा जो अनंतकाल तक पूरे संसार पर राज्य करेगा। पहले से ही कुलपति याकूब ने उत्पत्ति 49:10 में घोषणा की थी कि राज्य-राज्य के लोग यहूदा के राजकीय घराने के अधीन हो जाएंगे। न्यायियों के समय में यहूदा के राजकीय वंश में इस आशा को न्यायियों 1:1, 2 में यहूदा के गोत्र को दी गई अग्रणी भूमिका में स्वीकार किया गया। राजतंत्र के दौरान इस अपेक्षा की पूर्णता को भजन 72 जैसे अनुच्छेदों में विशेष रीति से दाऊद के घराने के साथ पहचाना गया। और कई अनुच्छेदों में इस्राएल के भविष्यवक्ताओं ने भविष्यवाणी की कि सब राष्ट्रों पर दाऊद के महान पुत्र की विजय के साथ निर्वासन की समाप्ति होगी।

अतः यहोशू के समय के इस्राएलियों के समान मूल पाठक जानते थे कि वे उनसे भी बड़ी किसी योजना के भाग हैं। और इस कारण, उन्हें वापस उस ओर नहीं मुड़ना था जो यहोशू ने किया था। उन्हें उन बातों को अपने समय में लागू करना था जो कनान पर विजय पाने के समय हुआ था, जब परमेश्वर इस्राएल के राजा की भविष्य की वैश्विक विजय की ओर इतिहास को आगे बढ़ाता है।

## गोत्रों को उनका उत्तराधिकार दिया जाना

हमारे लेखक ने अपने पाठकों से अपेक्षा की कि वे इस्राएल के गोत्रों के उत्तराधिकार के बँटवारे से संबंध में उसकी पुस्तक के दूसरे विभाजन के समान धर्मवैज्ञानिक दृष्टिकोणों को प्राप्त करें।

**आदिकालीन मानवीय अधिकार —** पहला, मूसा की पुस्तकों से वह समझ गया था कि इस्राएल द्वारा कनान पर अधिकार करना पृथ्वी पर मनुष्यजाति द्वारा अधिकार कर लेने की परमेश्वर की आदिकालीन बुलाहट पर आधारित था। परमेश्वर ने आदिकाल से ही निर्धारित किया था कि पृथ्वी उसके राज्य में बदल जाएगी जब उसके विश्वासयोग्य स्वरूप इसे भरकर अपने अधिकार में ले लेंगे। इस बुलाहट का वर्णन सबसे पहले उत्पत्ति 1:26-30 में किया गया था, और बाद में इसकी पुष्टि उत्पत्ति 9:1-3 में हुई। अतः यहोशू की पुस्तक में इस्राएल के गोत्रों के उत्तराधिकार का बँटवारा मूल पाठकों के लिए स्पष्ट रूप से प्रासंगिक था। यहोशू के समय के इस्राएलियों के समान मूल पाठकों को भी पृथ्वी पर अधिकार करने के परमेश्वर द्वारा मनुष्यजाति को दिए गए आदेश में सहभागी होने के लिए बुलाया गया था।

**इस्राएल का विशेष उत्तराधिकार —** दूसरा, हमारा लेखक पंचग्रंथ से उचित रूप से समझ गया था कि परमेश्वर ने इस्राएल के विशेष उत्तराधिकार को स्थापित किया था। और यहोशू के समय में इस्राएल के भूमि के बँटवारे ने इस उत्तराधिकार की आरंभिक पूर्णता को प्रस्तुत किया। उदाहरण के लिए, उत्पत्ति 15:18-21 में परमेश्वर ने अब्राहम से उसके वंश के लिए प्रतिज्ञा की जो मिस्र की सीमा से परात नदी तक



चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

के देश के लिए थी। अतः पंचग्रंथ की शब्दावली से लेते हुए यहोशू की पुस्तक बार-बार उनकी भूमि पर इस्राएल के अधिकार को इब्रानी क्रिया *नाखाल* (נָחַל) — अर्थात् "प्राप्त करना" — और संज्ञा *नाखालाह* (נַחֲלָה)— अर्थात् "उत्तराधिकार" के द्वारा दर्शाती है। यह शब्द दर्शाता है कि इस्राएल का देश परमेश्वर की ओर दिया जाने वाला चिरस्थाई देश था।

इसी कारण, मूल पाठकों के पास गोत्रों के उत्तराधिकार के बँटवारे में यहोशू द्वारा किए गए कार्य से सीखने के लिए बहुत कुछ था। न्यायियों के समय में इस्राएल के गोत्रों के बीच की अशांति और बाहर के लोगों के द्वारा उत्पन्न समस्याओं ने यहोशू की सफलताओं में बाधा डाली। राजतंत्र के दौरान इस्राएल के राजाओं ने इस्राएल के देश की सीमाओं का विस्तार किया, परंतु उन्होंने हार और क्षतियों का अनुभव भी किया। और निस्संदेह, बेबीलोनी निर्वासन के दौरान परमेश्वर की प्रजा के केवल थोड़े ही लोग देश में बचे रहे। और वे वहाँ दूसरे देशों की तानाशाही के अधीन ही रहे। अतः यहोशू के द्वारा इस्राएल के गोत्रों के उत्तराधिकार के बँटवारे ने मूल पाठकों को महत्वपूर्ण अंतर्दृष्टि प्रदान की जब वे अपने समय में परमेश्वर की सेवा में जीवनयापन करने का प्रयास कर रहे थे।

**इस्राएल के राजा का भविष्य का उत्तराधिकार —** तीसरा, हमारा लेखक यह भी जानता था कि इस्राएल द्वारा कनान को प्राप्त करना इस्राएल के राजा के भविष्य के उत्तराधिकार की ओर एक कदम आगे बढ़ाना है। नियुक्त समय पर इस्राएल का महान और धर्मी राजा प्रत्येक देश और राष्ट्र पर अधिकार कर लेगा जब वह पूरी पृथ्वी पर अधिकार करने की मनुष्यजाति की मूल बुलाहट को पूरा करेगा। जैसा कि हमने उल्लेख किया है, उत्पत्ति 49:10 घोषणा करता है कि एक दिन यहूदा का राजकीय पुत्र तब तक राज्य करता रहेगा जब तक "राज्य राज्य के लोग उसके अधीन [न हो जाएँ]।" इसके अतिरिक्त उत्पत्ति 17:4 में परमेश्वर ने अब्राहम से यह प्रतिज्ञा की, "तू जातियों के समूह का मूलपिता हो जाएगा।" इसीलिए भजन 2:8 में परमेश्वर ने विशेषकर दाऊद के घराने से कहा, "मैं जाति जाति के लोगों को तेरी सम्पत्ति होने के लिये, और दूर दूर के देशों को तेरी निज भूमि बनने के लिये दे दूँगा।" इस्राएल के भविष्यवक्ताओं ने बहुत बार घोषणा की कि दाऊद के महान पुत्र का देश पृथ्वी के एक कोने से दूसरे कोने तक फैला हुआ होगा। और पौलुस ने पुराने नियम के इन दृष्टिकोणों को रोमियों 4:13 में सारगर्भित किया जब उसने लिखा, "क्योंकि यह प्रतिज्ञा कि वह जगत का वारिस होगा" अब्राहम और उसके वंश को दी गई। हमारे लेखक के मूल पाठकों के लिए इसके अर्थ स्पष्ट थे। उन्हें उन बातों को जो वे यहोशू की पुस्तक में पढ़ते हैं उन रूपों में लागू करना था जिनमें वह अपने लोगों की उन समयों में अगुवाई कर रहा था जब वे वैश्विक उत्तराधिकार के लक्ष्य की ओर बढ़ रहे थे।

> रोमियों 4 में हम देखते हैं कि प्रेरित पौलुस अब्राहम और उसके वंश को मिलनेवाले उत्तराधिकार की प्रतिज्ञा की व्याख्या पूरे जगत को शामिल करने के रूप में करता है। और शायद पहले पहल इससे हमें हैरानी होगी। हम प्रतिज्ञा के देश के बारे केवल यही सोचते हैं कि वह भूमध्य सागर के पूर्वी किनारे के साथ-साथ की ही भूमि मात्र है। परंतु यह वास्तव में ऐसे है जैसे पौलुस अब्राहम की वाचा को वैश्विक, पूरे संसार को शामिल करने के रूप में समझता है। इसलिए अक्सर वह वंश, अर्थात् अब्राहम की संतान के बारे में बात करता है, जिसमें न केवल उसके शारीरिक वंशज शामिल होते हैं बल्कि वास्तव में वे भी जो अब्राहम के विश्वास का अनुसरण करते हैं, अर्थात् विश्वास के क़दमों पर जो परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं पर भरोसा करते हैं। वास्तव में, पौलुस इस बात पर बल देता है कि न केवल यहूदी, बल्कि मसीह पर विश्वास करनेवाले अन्यजाति के लोग भी अब्राहम के वंशज हैं, परमेश्वर की प्रतिज्ञा के अनुसार वारिस हैं — गलातियों 3 के अंत में। इसलिए जब पौलुस रोमियों 4 में कहता है कि अब्राहम की संतान विश्वास के द्वारा पूरे जगत को प्राप्त करेगी, तो वह वास्तव में उसी समझ को आगे बढ़ा रहा है।

— डॉ. डेनिस ई. जॉनसन

## वाचाई विश्वासयोग्यता

हमारी पुस्तक के पहले और दूसरे विभाजन के समान, यहोशू के लेखक ने अपने मूल पाठकों से अपेक्षा की कि वे पंचग्रंथ से कुछ धर्मवैज्ञानिक दृष्टिकोणों को ध्यान में रखें, जब वे तीसरे विभाजन को लागू करते हैं — वाचाई विश्वासयोग्यता के प्रति इस्राएल की बुलाहट।

**आदिकालीन मानवीय विश्वासयोग्यता —** पहला, हमारा लेखक पंचग्रंथ से समझ गया था कि वाचाई विश्वासयोग्यता परमेश्वर के प्रति मानवीय विश्वासयोग्यता की आदिकालीन मांग पर आधारित थी। परमेश्वर के स्वरूप बनना ही हमें वाचा के द्वारा परमेश्वर से बाँधता है और यह बंधन उसके प्रति विश्वासयोग्य सेवा की मांग करता है। आदम में संपूर्ण मनुष्यजाति के साथ परमेश्वर की वाचा ने आज्ञाकारिता की मांग की, जैसा कि उत्पत्ति 1-3 और होशे 6:7 में दर्शाया गया है। और उत्पत्ति 6, 9, में नूह के साथ परमेश्वर की वाचा ने प्रकट किया कि सब मनुष्यों को वाचा के द्वारा परमेश्वर की सेवा करनी जरूरी है। क्योंकि यह सब समयों के सब लोगों के पर लागू होता है, इसलिए मूल पाठक अपने समय में वाचाई विश्वासयोग्यता के लिए यहोशू की बुलाहट से बहुत कुछ सीख सकते थे। अन्य सब मनुष्यों के समान उन्हें भी परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्यता के साथ सेवा करनी जरूरी थी।

**इस्राएल की विशेष वाचाई विश्वासयोग्यता —** दूसरा, मूल पाठकों को इस्राएल की विशेष वाचाई विश्वासयोग्यता से अवगत होना जरूरी था। हमारा लेखक इस बात पर ध्यान देने के प्रति सचेत था कि विजय पाने के समय में यहोशू ने लोगों को परमेश्वर की वाचा के प्रति विश्वासयोग्य बने रहने के प्रति उत्साहित किया था। और लोगों ने ऐसा करने की शपथ खाई थी।

मूल पाठक उत्पत्ति 17 से अब्राहम के साथ परमेश्वर की वाचा का ज्ञान रखते होंगे। यहाँ परमेश्वर ने अपने समक्ष निष्पाप रहने के समर्पण के रूप में ख़तना कराने की मांग की। और जो वाचा परमेश्वर ने निर्गमन 19-24 में मूसा के साथ बांधी और जिसे व्यवस्थाविवरण की पुस्तक में नया बनाया, उसमें स्पष्ट किया कि इस्राएल को मूसा की व्यवस्था का पालन करना था। अब हमारी पुस्तक के तीसरे विभाजन में यहोशू ने उन कष्टों पर ध्यान केंद्रित किया जो इस्राएल पर तब आएँगे यदि वे इन मांगों को पूरा नहीं करते हैं, विशेषकर झूठे देवताओं को ठुकराने की मांग। और उसने उनके सामने उन कष्टों, पराजय और प्रतिज्ञा के देश से निर्वासन की संभावनाओं को सामने रखा यदि वे विश्वासयोग्य नहीं रहते हैं।

पुस्तक के मूल पाठकों के समय तक ये कष्ट आने आरंभ हो चुके थे। न्यायियों के समय में इस्राएल परेशानियों के चक्र में प्रवेश कर चुका था। राजतंत्र के दौरान लोगों और उनके राजाओं के मूर्तिपूजा में लिप्त रहने के कारण इस्राएल पर और अधिक दंड आए। और बेबीलोनी निर्वासन के दौरान प्रतिज्ञा के देश को खोने का खतरा एक भयानक वास्तविकता बन गया था। इसलिए मूल पाठकों को परमेश्वर के उन दंडों के प्रकाश में यहोशू की चेतावनियों पर ध्यान देना था जिनका सामना वे अपने समय में कर रहे थे।

**इस्राएल के राजा के साथ भविष्य की वाचा —** तीसरा, यहोशू के समय में जो हुआ उससे यह अपेक्षा भी की गई कि परमेश्वर इस्राएल के राजा के साथ भविष्य की एक वाचा बाँधेगा। हम जानते हैं कि उत्पत्ति 49:10 दर्शाता है कि परमेश्वर ने राज्य करने के लिए यहूदा के राजा का अभिषेक किया था। और उत्पत्ति 17:6 भी दर्शाता है कि इस्राएल का एक राजा होगा। यद्यपि न्यायियों के समय में कोई वैध राजा नहीं था, फिर भी न्यायियों 21:25 जैसे अनुच्छेद और 1 शमूएल 2:10 में हन्ना के गीत का अंत दर्शाता है कि इस अवधि के दौरान भी विश्वासयोग्य लोगों ने इस्राएल के राजकीय घराने के माध्यम से छुटकारे की अपेक्षा की।



चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

अब यदि यहोशू की पुस्तक इस्राएल के राजतंत्र या बेबीलोनी निर्वासन के दौरान लिखी गई थी, तो मूल पाठकों को वाचाई विश्वासयोग्यता के प्रति यहोशू की बुलाहट को दाऊद के साथ परमेश्वर की राजवंशी वाचा के साथ जोड़ना था। 2 शमूएल 7 और भजन 89, 132 जैसे अनुच्छेदों में हम देखते हैं कि कैसे दाऊद के साथ परमेश्वर की वाचा ने विश्वासयोग्यता की आवश्यकता पर ध्यान केंद्रित किया। दाऊद के राजकीय वंश को परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्य होना था क्योंकि वे परमेश्वर के सामने इस्राएल के लोगों का प्रतिनिधित्व करते थे।

इसके अतिरिक्त, यशायाह 53:11 की भविष्यवाणी के अनुसार अनंत क्षमा "[यहोवा के] धर्मी दास," इस्राएल के सिद्ध धर्मी राजा की बलिदानी मृत्यु के कारण भविष्य में प्राप्त होगी। और यह धर्मी राजा कोई और नहीं बल्कि यीशु मसीह है जो उस नई वाचा को लेकर आया जिसकी भविष्यवाणी यिर्मयाह 31 में की गई थी। यह वाचा तब अपनी पूर्णता में आएगी जब मसीह वापस आएगा और सब बातों को नया बनाएगा। जब मूल पाठकों ने वाचाई विश्वासयोग्यता की यहोशू की बुलाहट को अपने समयों में लागू किया, तो उन्हें ऐसा उस प्रकाश में लागू करना पड़ा कि वे उन वाचाओं के विकास में कहाँ खड़े थे जो परमेश्वर ने अपने लोगों से बाँधी थीं।

अतः जब हम यहोशू की पुस्तक के मूल अर्थ को समझने का प्रयास करते हैं, तो हमें इस बात का ध्यान रखना है कि हमारा लेखक अपने पाठकों से चाहता था कि वे वह समझ लें जो यहोशू के समय में हुआ था। परंतु साथ ही, वह चाहता था कि वे जयवंत विजय, गोत्रों के उतराधिकार के बँटवारे, और वाचाई विश्वासयोग्यता की बुलाहट के उसके विवरण को ऐसे रूपों में लागू करें जो उनके अपने समयों और परिस्थितियों में उचित हों।

यहोशू की पुस्तक के अपने परिचय में अब तक हमने इसके लेखक और लेखन के समय, और इसके साथ-साथ इसकी रूपरेखा और इसके मूल उद्देश्य पर ध्यान दिया है। अब हम अपने अध्याय के तीसरे मुख्य विषय का परिचय देने के लिए तैयार हैं : मसीही अनुप्रयोग। आज जब हम मसीह का अनुसरण करते हैं तो यहोशू की पुस्तक को हमारे जीवनों पर कैसे प्रभाव डालना चाहिए?

## मसीही अनुप्रयोग

इब्रानी में "यीशु" नाम को "यहोशूआ" कहा जाता है। मसीही दृष्टिकोण से यह सरल बात हमें याद दिलाती है कि जो यहोशू के समय में आरंभ हुआ उसे यीशु पूर्ण, या पूरा करता है। और कई रूपों में यहोशू की पुस्तक को अपने जीवनों में लागू करना मसीह में इस पूर्णता से निकलता है। यहोशू की पुस्तक और यीशु के बीच के संबंध को हम जितना अधिक समझते हैं, उतना ही हम मसीह के अनुयायियों के रूप में हम पर इसके होनेवाले प्रभाव को समझ सकते हैं। जैसा कि हम देख चुके हैं, हमारी पुस्तक के लेखक ने इस्राएल की बाद की पीढ़ियों को अगुवाई प्रदान करने के लिए यहोशू के नेतृत्व में इस्राएल की जयवंत विजय, गोत्रों के उत्तराधिकार के बँटवारे, और वाचाई विश्वासयोग्यता के बारे में लिखा। परंतु हमारा लेखक यह भी समझ गया था कि भविष्य के किसी समय में इस्राएल का एक महान राजा आएगा और वह यहोशू की पुस्तक में पाए जानेवाले सब लक्ष्यों को पूरा करेगा।

> जब यहोशू जयवंत विजयों की अगुवाई कर रहा था तो वह प्रतिज्ञा के देश पर विजय प्राप्त करने के लिए इस्राएल राष्ट्र की अगुवाई कर रहा था। उसने इस्राएल राष्ट्र के लिए मध्यस्थता की जब वे असफल रहे और जब उन्होंने अधर्म के काम किए। उसने इस्राएल राष्ट्र के लिए प्रार्थना की और फिर प्रतिज्ञा के राष्ट्र की अगुवाई प्रतिज्ञा के देश में की। यह सब प्रभु यीशु मसीह की तस्वीर है। जैसा कि



चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

> इब्रानियों 4 में लिखा है, मसीह ने परमेश्वर के लोगों को प्रतिज्ञा किया हुआ उत्तराधिकार पाने में अगुवाई की। वह परमेश्वर के राष्ट्र के लिए मध्यस्थता करता है, उस राष्ट्र के लिए प्रार्थना करता है, और उस राष्ट्र के लिए बिचवई करता है, और नए नियम के राष्ट्र, जो कि प्रभु यीशु मसीह की कलीसिया है, के लिए महायाजक का कार्य करता है। यह सब वह तस्वीर है जो नए नियम के समय के लिए है।
>
> — रेव्ह. हेनरिक तुर्कानिक, अनुवाद

मोटे तौर पर, इस्राएल के मसीहा के रूप में यीशु दो मुख्य रूपों में इन लक्ष्यों को पूरा करता है। पहला, जब हम यीशु की तुलना उन अच्छी बातों से करते हैं जिन्हें इस्राएल ने यहोशू की अगुवाई में पूरा किया था — कनान पर विजय, प्रतिज्ञा के देश पर आरंभिक अधिकार, और परमेश्वर के प्रति इस्राएल की विश्वासयोग्य वाचाई सेवा — तो हम देख सकते हैं कि कैसे यीशु प्रत्येक लक्ष्य को बढ़ाता है और उसे पूरा करता है। और दूसरा, जब हम यीशू की उपलब्धियों को इस्राएल की विफलताओं — आज्ञा के अनुसार सब कनानियों का नाश करने में उनकी योग्यता, गोत्रों के उत्तराधिकार के बँटवारे से संबंधित उनके झगड़े और वाद-विवाद, तथा परमेश्वर की वाचा के प्रति विश्वासयोग्य बने रहने के प्रति उनकी असफलता — के सामने रखते हैं, तो हम देख सकते हैं कि यीशु वास्तव में इस्राएल की सब विफलताओं को पलट देता है। और इस प्रकार, यीशु संपूर्ण पृथ्वी पर जयवंत विजय प्राप्त करता है, वह सब बातों पर उत्तराधिकार को प्राप्त करता है, और वह पूरे जगत में वाचाई विश्वासयोग्यता को स्थापित करता है।

परंतु यह समझने के लिए कि कैसे यहोशू की पुस्तक के मसीही अनुप्रयोगों को आज लागू किया जाए, हमें कुछ याद रखने की आवश्यकता है : परमेश्वर ने निर्धारित किया कि इन लक्ष्यों की मसीहा-संबंधी पूर्णता *समय के साथ* प्रकट होगी।

पुराने नियम की भविष्यवाणी के आधार पर पहली सदी के फिलिस्तीन के बहुत से यहूदियों ने सही विश्वास किया कि मसीहा वैश्विक विजय को प्राप्त करेगा, संसार पर अधिकार कर लेगा, और हर जगह वाचाई विश्वासयोग्यता को स्थापित करेगा। परंतु इन यहूदियों ने यह भी विश्वास किया कि वह ऐसे बहुत ही जल्द और विनाशकारी रूप में करेगा। इसके विपरीत, यीशु और नए नियम के लेखकों ने बार-बार स्पष्ट किया कि जिस राज्य की स्थापना यीशु ने की वह तीन परस्पर-संबंधित चरणों में धीरे-धीरे प्रकट होगा।

हम राज्य के तीनों चरणों को अलग-अलग करके देखने के द्वारा यहोशू की पुस्तक के मसीही अनुप्रयोग के प्रति एक दिशा-निर्धारण को प्राप्त करेंगे।

## उद्घाटन

पहला, अपने राज्य के उद्घाटन में यीशु ने जो पूरा किया उसका अध्ययन करने के द्वारा हम देखेंगे कि कैसे मसीह ने यहोशू की पुस्तक में स्थापित अपेक्षाओं को पूरा किया। दूसरा, हम जाँचेंगे कि कैसे वह राज्य की निरंतरता के दौरान यहोशू की पुस्तक को पूरा करता है। और तीसरा, हम खोजेंगे कि यीशु अपने महिमामय पुनरागमन पर राज्य की पूर्णता के दौरान क्या पूरा करता है। आइए पहले मसीह के राज्य के उद्घाटन पर ध्यान दें।

### जयवंत विजय

नया नियम कई स्थानों पर सिखाता है कि परमेश्वर के राज्य का यीशु द्वारा उद्घाटन उसकी महिमामय वैश्विक जयवंत विजय का आरंभिक चरण था। परंतु जब हम यहोशू की पुस्तक में पाई

जानेवाली इस्राएल की जयवंत विजय की तुलना यीशु के पहले आगमन से करते हैं तो हम एक विशिष्ट भिन्नता को देखते हैं। यहोशू के समान भौतिक तलवार उठाने की अपेक्षा यीशु ने एक दोहरी नीति का अनुसरण किया : उसने शैतान और दुष्टात्माओं की पूरी पराजय को आरंभ किया। और उसने मनुष्यों को आने वाले दंड की चेतावनी देने और परमेश्वर की दया का प्रस्ताव देने के द्वारा उनके समक्ष राज्य के सुसमाचार या "शुभ संदेश" की घोषणा भी की।

यूहन्ना 12:31, 32 में यीशु ने यह कहते हुए इस दोहरी नीति का वर्णन किया : "इस संसार का सरदार निकाल दिया जाएगा; और मैं... सब को अपने पास खीचूँगा।" इसी कारण कुलुस्सियों 2:15 में प्रेरित पौलुस ने यीशु की मृत्यु का वर्णन ऐसे समय के रूप में किया जब "उसने प्रधानताओं और अधिकारों को ऊपर से उतारकर उनका खुल्लमखुल्ला तमाशा बनाया।" और इसी लिए पौलुस ने इफिसियों 4:8 में यह भी कहा कि "[मसीह] ऊँचे पर चढ़ा और बन्दियों को बाँध ले गया," अर्थात् उन मनुष्यों में से जिन्होंने शैतान के राज्य की सेवा की थी, और [उन्हें] मनुष्यों को दान [स्वरूप] दिए।"

### गोत्रों को उनका उत्तराधिकार दिया जाना

नया नियम इस विषय में दो दृष्टिकोणों पर बल देता है कि कैसे मसीह के राज्य के उद्घाटन ने परमेश्वर के लोगों के लिए वैश्विक उत्तराधिकार की आशा को पूरा किया। एक ओर, इब्रानियों 1:2 स्पष्ट करता है कि "[परमेश्वर ने] हम से पुत्र के द्वारा बातें कीं, जिसे उसने सारी वस्तुओं का वारिस ठहराया।" मत्ती 28:18 में यीशु ने अपने चेलों को बताया कि उसने अपने उत्तराधिकार को प्राप्त कर लिया था जब उसने यह कहा, "स्वर्ग और पृथ्वी का सारा अधिकार मुझे दिया गया है।"

दूसरी ओर नया नियम इस बात पर भी बल देता है कि यीशु ने तब अपने वैश्विक उत्तराधिकार का पूर्व-अनुभव भी प्रदान किया जब उसने अपनी कलीसिया पर पवित्र आत्मा को उंडेला। जैसे कि यशायाह 44:3, 4 की भविष्यवाणियाँ दर्शाती हैं, पवित्र आत्मा का उंडेला जाना एक दिन पूरी सृष्टि को नया बना देगा। अतः इफिसियों 1:14 में पौलुस कलीसिया पर पवित्र आत्मा के उंडेले जाने का वर्णन "हमारी मीरास [के] बयाने" के रूप में करता है। और जैसे कि 2 कुरिन्थियों 1:22 और 5:5 में वह लिखता है, आत्मा उस आने वाली बातों, अर्थात् नए स्वर्ग और नई पृथ्वी में हमारे भावी उत्तराधिकार का "बयाना" है।

### वाचाई विश्वासयोग्यता

इसके अतिरिक्त, नया नियम घोषणा करता है कि मसीह के द्वारा राज्य के उद्घाटन ने वाचाई विश्वासयोग्यता पर बल दिया जब वह नए वाचाई युग को लेकर आया। यिर्मयाह 31 में नई वाचा की भविष्यवाणी की ओर संकेत करते हुए यीशु ने लूका 22:20 में अपने चेलों से कहा, "यह कटोरा मेरे उस लहू में... नई वाचा है।" और नए नियम के लेखकों ने स्पष्ट किया कि यीशु ने सच्चे विश्वासियों के लिए अंतिम प्रायश्चित्त के रूप में क्रूस पर परमेश्वर के अनंत दंड को सह लिया।

परंतु हमें यह याद रखना चाहिए कि यीशु अपने पहले आगमन में पृथ्वी पर नई वाचा की पूर्णता को लेकर नहीं आया था। अतः उसने और उसके चेलों और भविष्यवक्ताओं ने सच्चे विश्वासियों को भी परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्य रहने का निर्देश दिया था क्योंकि हम पूरी तरह से पवित्र नहीं हुए हैं। और यही नहीं, जैसे कि पौलुस ने 2 कुरिन्थियों 11:26 और गलातियों 2:4 में संबोधित किया, हमारे बीच "झूठे भाई" भी हैं। वाचाई विश्वासयोग्यता की बुलाहट अब भी आगे बढ़ रही है क्योंकि हम नई वाचा की संपूर्ण पूर्णता की प्रतीक्षा कर रहे हैं।

## निरंतरता

कई रूपों में, उद्घाटन के संबंध में यहोशू की पुस्तक के हमारे मसीही अनुप्रयोग उसके समानांतर होते हैं जो नया नियम मसीह के राज्य की निरंतरता के विषय में भी सिखाता है।

## जयवंत विजय

नया नियम यीशु के राज्य की निरंतरता का वर्णन ऐसे समय के रूप में करता है जिसमें उसकी जयवंत विजय कलीसिया में कार्यरत उसकी आत्मा के द्वारा पूरे संसार तक पहुँचती है। जैसा कि पौलुस ने 1 कुरिन्थियों 15:25 में कहा, "जब तक [मसीह] अपने बैरियों को अपने पाँवों तले न ले आए, तब तक उसका [स्वर्ग में] राज्य करना अवश्य है।" परंतु कलीसिया के रूप में अपने मिशन में हम अब यीशु, और उसके चेलों और भविष्यवक्ताओं के समान भौतिक हथियारों को नहीं लेते हैं। इसकी अपेक्षा, हम उस दोहरी नीति के साथ आगे बढ़ते हैं जिसे यीशु अपने पहले आगमन में स्थापित करता है।

एक ओर, हम शैतान और उसकी दुष्टात्माओं की पराजय को संसार के अधिक से अधिक क्षेत्रों में फैलाते हैं। जैसे कि इफिसियों 6:12 हमें बताता है, "हमारा यह मल्लयुद्ध लहू और मांस से नहीं परन्तु... इस संसार के अन्धकार के हाकिमों से और उस दुष्टता की आत्मिक सेनाओं से है जो आकाश में हैं।" और दूसरी ओर, हम इस शुभ संदेश का प्रचार करने के द्वारा मसीह का प्रतिनिधित्व करते हैं जो मनुष्यजाति को परमेश्वर के आने वाले दंड की चेतावनी, और उन्हें क्षमा तथा अनंत जीवन की दया का प्रस्ताव देता है। 2 कुरिन्थियों 5:20 के शब्दों में, "हम मसीह के राजदूत हैं... हम मसीह की ओर से निवेदन करते हैं कि परमेश्वर के साथ मेलमिलाप कर लो।"

## गोत्रों को उनका उत्तराधिकार दिया जाना

हम यह भी देखते हैं कि परमेश्वर के लोगों के वैश्विक उत्तराधिकार के बारे में हमारा पूर्वानुमान कलीसियाई इतिहास में उसके राज्य की संपूर्ण निरंतरता में आगे बढ़ाया जाता है। यह सच्चाई कि यीशु सब बातों में परमेश्वर का नियुक्त वारिस है, और अधिक स्पष्ट हो जाती है जब सब स्थानों के लोग उसे प्रभु के रूप में स्वीकार कर रहे हैं। और मसीह पूरे संसार में अधिक से अधिक लोगों को पवित्र आत्मा का बयाना वितरित करना जारी रखता है। जैसे कि गलातियों 3:29 हमें बताता है, "यदि तुम मसीह के हो तो... प्रतिज्ञा के अनुसार वारिस भी हो।" रोमियों 8:16, 17 के शब्दों में, "हम... वारिस भी, वरन् परमेश्वर के वारिस और मसीह के संगी वारिस हैं।"

## वाचाई विश्वासयोग्यता

कई रूपों में, हम यह भी देख सकते हैं कि कैसे वाचाई विश्वासयोग्यता पर यहोशू का बल मसीह के राज्य की निरंतरता के दौरान वर्तमान सच्चाई बना रहता है। जब कलीसिया पूरे संसार में पहुँच रही है, तो नई वाचा के लहू का पूर्ण प्रायश्चित्त आज भी उन सब के पापों को ढाँप लेता है जिनके पास उद्धाररूपी विश्वास है। जो मसीह में हैं वे अनंत दंड से पूरी तरह से छुड़ाए हुए ठहराए गए हैं। परंतु हर समय की कलीसिया के लिए यह आज भी महत्वपूर्ण है कि वह वाचाई विश्वासयोग्यता का पालन करे।

एक ओर, विश्वासियों को अब भी परमेश्वर के प्रति अपनी भक्ति में बढ़ना जरूरी है। उन्हें इब्रानियों 12:14 जैसे अनुच्छेदों को आज भी अपने हृदय में बसाना जरुरी है जहाँ लिखा है, "सबसे मेल मिलाप रखो, और उस पवित्रता के खोजी हो जिसके बिना कोई प्रभु को कदापि न देखेगा।" और दूसरी ओर, हमारे बीच के झूठे भाइयों को आज भी चेतावनी देना जरूरी है ताकि वे मन फिराएँ और उद्धार पाएँ। जैसे कि इब्रानियों 10:26, 27 में लिखा है, "यदि हम जान बूझकर पाप करते रहें, तो पापों के लिये फिर कोई बलिदान बाकी नहीं। हाँ, दण्ड का एक भयानक बाट जोहना और आग का ज्वलन बाकी है जो [परमेश्वर के] विरोधियों को भस्म कर देगा।"

> वाचाई विश्वासयोग्यता और नवीनीकरण का विषय यहोशू की पुस्तक का एक महत्वपूर्ण विषय है। यहोशू की पुस्तक के लगभग प्रत्येक युद्ध में जिसमें यहोशू ने लोगों की अगुवाई की थी, हम देखते हैं कि वहाँ वाचाई सदर्भ के अंतर्गत वाचा के नवीनीकरण और यहोवा के प्रति विश्वासयोग्यता के लिए एक समारोह होता



चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

> था... यह विषय मसीहियों के रूप में बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि हम भी प्रभु के साथ एक वाचा में हैं — उस नई वाचा में जो मसीह ने अपने लहू के द्वारा हमसे बाँधी है। वाचाई विश्वासयोग्यता का विषय प्रभु के कार्य, प्रभु के उपकारों और प्रभु के अनुग्रह से संबंधित है। अतः जब प्रभु ने इस्राएल के प्रति दया दिखाई और उनके प्रति अपनी प्रतिज्ञाओं को पूरा किया, तो यहोशू के लिए यह महत्वपूर्ण था कि वह लोगों को वाचा के भीतर प्रभु के प्रति वफ़ादार और विश्वासयोग्य बनने के महत्व की याद दिलाए। यही बात हम पर भी लागू होती है। प्रभु ने मसीह में हम पर दया दिखाई है, और हम उसके अनुग्रह के कार्य के द्वारा उद्धार को प्राप्त करते हैं। फलस्वरूप, हमें प्रभु के प्रति विश्वासयोग्य बनना है, और यह हमारी आज्ञाकारिता में, अर्थात् प्रभु की आज्ञाओं और विधियों के पालन में दिखाई देना चाहिए। जब हम आज्ञाकारिता, विश्वासयोग्यता और वफ़ादारी का जीवन जीते हैं तो हम उसके प्रति अपने आभार को व्यक्त करते हैं जो प्रभु ने हमारे लिए आरंभ से किया है। प्रभु वह है जो हमें आशीषें देने और हम पर उपकार करने के द्वारा वाचा में पहल करता है, और हम वाचा के संदर्भ में अपनी आज्ञाकारिता और वफ़ादारी के द्वारा इन आशीषों और उपकारों का प्रत्युत्तर देते हैं।
>
> — रेव्ह. शेरिफ गेंडी, अनुवाद

## पूर्णता

यह देख लेने के बाद कि मसीह के राज्य के प्रकट होने के उद्घाटन और उसकी निरंतरता में यहोशू की पुस्तक का मसीही अनुप्रयोग कैसे प्रकट होता है, अब हमें मसीह के राज्य की पूर्णता की ओर संक्षिप्त रूप से मुड़ना चाहिए। हमें यहोशू की पुस्तक के प्रकाश में मसीह की भावी और अंतिम पूर्णता में अपनी आशा को कैसे लागू करना चाहिए?

### जयवंत विजय

नया नियम बिना किसी संदेह के दर्शाता है कि मसीह के राज्य की पूर्णता उसकी वैश्विक जयवंत विजय का महान समापन होगी वह शैतान और उसकी दुष्टात्माओं की पराजय को पूर्ण करेगा। और जब यीशु अपनी महिमा में वापस आएगा, तो अविश्वासियों के प्रति परमेश्वर की दया के समय का भी अंत हो जाएगा। तब यहोशू के समय के कनान के विरुद्ध परमेश्वर का दंड उस दंड की अपेक्षा बहुत छोटा प्रतीत होगा जो यीशु परमेश्वर के प्रत्येक मानवीय शत्रु के विरुद्ध लेकर आएगा। जैसा कि हम प्रकाशितवाक्य 19:14, 15 में पढ़ते हैं, “स्वर्ग की सेना... उसके पीछे पीछे [आएगी]। जाति जाति को मारने के लिये उसके मुँह से एक चोखी तलवार [निकलेगी]।”

### गोत्रों को उनका उत्तराधिकार दिया जाना

निस्संदेह, जब मसीह अपने राज्य की पूर्णता के समय वापस आएगा, तो उस वैश्विक उत्तराधिकार — अर्थात् सब वस्तुओं के वारिस होने के नाते अपने अधिकार — को पूरी तरह से प्राप्त करेगा। जैसे कि हम प्रकाशितवाक्य 11:15 में पढ़ते हैं, “जगत का राज्य हमारे प्रभु का और उसके मसीह का हो [जाएगा]।” और इस वैश्विक राज्य को उन सब में बाँटा जाएगा जो मसीह का अनुसरण करते हैं। मत्ती 25:34 के अनुसार अंतिम न्याय के दिन “राजा [मसीह पर विश्वास करनेवालों] से कहेगा, ‘... आओ, उस राज्य के अधिकारी हो जाओ, जो जगत के आदि से तुम्हारे लिये तैयार किया गया है।’”



चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

### वाचाई विश्वासयोग्यता

और मसीह के राज्य की पूर्णता के समय ही वाचाई विश्वासयोग्यता के प्रति परमेश्वर के लोगों को बुलाने की चेतावनियाँ समाप्त होंगी। जब मसीह का पुनरागमन होगा तो जो उद्धाररूपी विश्वास के साथ उसके पास नहीं आए होंगे, वे परमेश्वर के अनंत दंड के भागी होंगे। और जो सच्चे विश्वासी हैं, वे सब नई सृष्टि में प्रवेश करेंगे जहाँ नई वाचा की आशीषें अपनी पूर्णता में प्राप्त होंगी। जैसे कि प्रकाशितवाक्य 22:3 हमें बताता है, उस समय, "फिर स्राप न होगा, और परमेश्वर और मेम्ने का सिंहासन उस नगर में होगा और उसके दास उसकी सेवा करेंगे।"

वास्तव में, नया नियम हमें यह याद रखने को कहता है कि कैसे मसीह अपने राज्य के उद्घाटन, उसकी निरंतरता और पूर्णता में यहोशू की पुस्तक के विषयों को पूरा करता है। जब हम ऐसा करते है, तो यहोशू के समय में इस्राएल की विजय, उसका उत्तराधिकार और उसकी वाचाई विश्वासयोग्यता उस आश्चर्य के विषय में हमारे ज्ञान को और अधिक बढ़ाएगी जिसकी स्थापना मसीह ने अपने पहले आगमन में की थी। वे हमें सिखाते हैं कि कैसे हमें अपने जीवनों के प्रत्येक दिन परमेश्वर के प्रति सेवा में जीने हैं। और वे हमें इतिहास का वह भव्य समापन दिखाते हैं जब विजय पूर्ण हो जाएगी, नई सृष्टि का उत्तराधिकार हमारा होगा, और हम मसीह में परमेश्वर के विश्वासयोग्य वाचाई लोगों के रूप में निर्दोष ठहराए जाएँगे।

## उपसंहार

"यहोशू की पुस्तक के परिचय" में हमने तीन महत्वपूर्ण विषयों को प्रस्तुत किया है। पहला, हमने इन विषयों पर पारंपरिक, आलोचनात्मक और सुसमाचारिक दृष्टिकोणों सहित पुस्तक के लेखक और लेखन के समय का अध्ययन किया है। दूसरा, हमने पुस्तक की विषय-वस्तु और संरचना, तथा इसके मूल अर्थ पर ध्यान देने के द्वारा यहोशू की पुस्तक की रूपरेखा और उद्देश्य की जाँच की है। और तीसरा, हमने कुछ ऐसे मसीही अनुप्रयोगों का अध्ययन किया है जिन्हें यह देखने के द्वारा पुस्तक से लिया जा सकता है कि कैसे मसीह परमेश्वर के महिमामय राज्य के उद्घाटन, उसकी निरंतरता और पूर्णता में यहोशू की पुस्तक में स्थापित अपेक्षाओं को पूरा करता है।

यहोशू की पुस्तक ने प्राचीन इस्राएलियों को याद दिलाया कि अपने समय की चुनौतियों का सामना करते समय परमेश्वर ने यहोशू के जीवन के द्वारा उनके लिए क्या-क्या किया था। और कई रूपों में हम अपने जीवनों में भी ऐसी ही चुनौतियों का सामना करते हैं। परंतु जैसा कि हम इस श्रृंखला में देखेंगे, यहोशू की पुस्तक ने इस्राएल को इस बात के लिए अपने उत्साह को नया बनाने के अवसर दिए जो परमेश्वर उनके समय में कर रहा था। और यह आपको और मुझे नवीनीकरण के अवसर भी प्रदान करती है। जब हम इस पुस्तक के विषय में और अधिक सीखते हैं, तो हम न केवल इस ज्ञान में और अधिक बढ़ेंगे कि परमेश्वर ने पुराने नियम में यहोशू के माध्यम से क्या-क्या किया, बल्कि हम अपने इस ज्ञान में भी उन्नति करेंगे जो परमेश्वर ने हमारे महानतम यहोशूआ, अर्थात् हमारे उद्धारकर्ता यीशु के माध्यम से क्या-क्या किया है, क्या-क्या कर रहा है, और क्या-क्या करेगा।



चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।